अंतर्दृष्टि

JANUARY TO MARCH 2025

ITM
UNIVERSITY
GWALIOR • MP • INDIA
"CELEBRATING DREAMS"

ITM UNIVERSITY GWALIOR

"Believe nothing, no matter where you read it, or who said it, no matter if I have said it, unless it agrees with your own reason and your own common sense."

-BUDDHA

MESSAGE

Prof. Dr. Yogesh Upadhyay
Vice Chancellor, ITM University Gwalior

January - March 2025 Edition
ITM University has grown into a renowned institution, thanks to the unwavering dedication of our faculty, students, and alumni. Our students' achievements continue to make us immensely proud as they excel in diverse fields, inspiring us all with their accomplishments. This edition of Antardrishti celebrates their successes and highlights the myriad opportunities that ITM University offers.

We remain committed to providing a transformative educational experience that equips our students with the knowledge, skills, and confidence to thrive in an ever-evolving world. Our state-of-the-art facilities, cutting-edge curriculum, and supportive environment create an ideal space for learning and growth.

As we look toward the future, I am filled with optimism for ITM University. We aspire to be a global leader in education, nurturing innovative minds and shaping the leaders of tomorrow. Our continued investments in faculty, infrastructure, and research initiatives will ensure that our students receive the best possible education.
I encourage aspiring students to consider ITM University as their partner in achieving academic excellence and personal growth. Our dedicated faculty, supportive staff, and vibrant student community will provide an enriching and fulfilling experience.

Welcome to the third edition of Antardrishti. This magazine reflects our unwavering commitment to academic excellence, holistic student development, and fostering a culture of innovation. Together, let us continue to build upon ITM University's legacy and create a brighter future for generations to come.

EDITOR MESSAGE

Dr. MANISH JAISAL
HOD, SOJMC

January - March 2025 Edition

Reflecting on our time at ITM University, I am filled with immense pride and gratitude for the remarkable experiences we've shared. From thought-provoking lectures to exhilarating sports competitions, and from academic milestones to vibrant cultural celebrations, our journey continues to be truly inspiring.

The School of Journalism and Mass Communication remains a wellspring of knowledge and creativity. We have had the privilege of learning from esteemed faculty and industry leaders, such as Sparsh Srivastava, Raman Anand, and Atharva Patil, whose guest lectures and workshops have broadened our perspectives and motivated us toward excellence.

On the sports front, our athletes have demonstrated exceptional talent and teamwork, making us proud with their achievements. Their resilience and dedication continue to serve as a source of inspiration for all of us.

Beyond academics and sports, the university's cultural events stand as a testament to the diversity and creativity of our community. From traditional folk dances to electrifying celebrity shows, these events have embraced a wide range of cultures, fostering inclusivity and enriching our campus life.

As we embark on another promising year, I extend my deepest gratitude to our dedicated faculty, staff, and fellow students. Your passion and support have created an inspiring environment for growth and learning. Equipped with the knowledge and confidence ITM University has instilled in us, I am excited for the future and the contributions we will make to our respective fields.

Thank you for being part of this incredible journey. Together, we have built lasting memories and a strong sense of community, and I am confident that we will continue to make ITM University a beacon of knowledge and innovation.

Editor in Chief- Dr. Manish Jaisal
Design Editor- Mr. Aman Chaprod
Sub Editor`s- Ms. Sonali Singh
Student Editor-Ms. Kanak Rohit, Sanjana Rajawat, Risha Tiwari

Index

1. 10 वां राममनोहर लोहिया स्मृति व्याख्यान	-	8
2. मृदाशिल्प 'बस्तर' एवं 'बांकुड़ा' कला	-	9
3. 10वां इंटरनेशनल स्कल्पचर सिंपोजियम	-	10
4. बसंतोत्सव-2025	-	11
5. आर्मी डे	-	12
6. इबारत-17	-	13-15
7. एनुअल फंक्शन	-	16
8. वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2.0	-	17-18
9. Snapshots of ITM Sculpture	-	19
10. संगीत सम्मेलन	-	20-21
11. प्रेस कांफ्रेंस	-	22
12. सेनर्जी-2.0	-	23
13. Sports Achievements	-	24
14. माइक्रो और नैनोप्लास्टिक्स के प्रभाव	-	25
15. ' 'एआई के साथ नवाचार पत्रकारिता	-	26
16.''राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका	-	27

Index

16. गांधी ग्रामोफोन और रेडियो विषय पर कार्यशाला	-	28
17. 'युवा सप्ताह का आयोजन	-	29
18. नवाचार अवसर और कौशल विषय पर विशेष व्याख्यान	-	30
19. मेडिकोन-2.0 द्वितीय नेशनल कॉन्फ्रेंस	-	31
20. जैव विविधता' विषय पर कार्यशाला	-	32
21.'साइंस, आर्ट एंड रिलिजन' पर विशेष व्याख्यान	-	33
22.STUDENT'S CORNER	-	34-37
23.Event's ITMU	-	38-41

PAGES INSIDE

10 वां राममनोहर लोहिया स्मृति व्याख्यान

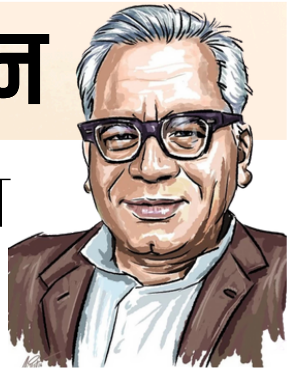

आईटीएम में डॉ. लोहिया के विचारों पर मंथन

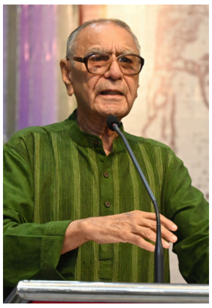

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर का प्रतिष्ठित अकादमिक आयोजन 10वां डॉ. राममनोहर लोहिया स्मृति व्याख्यान संस्थान के तुरारी परिसर स्थित उस्ताद अलाउद्दीन खान ऑडिटोरियम में हुआ। भारतीय ज्ञान परम्परा अध्ययन पीठ के अंतर्गत आयोजित स्मृति व्याख्या में मुख्य वक्ता के रूप में गोवा विश्वविद्यालय के विशिष्ट प्राचार्य प्रोफेसर आनन्द कुमार शामिल हुए। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की चांसलर श्रीमती रुचि सिंह ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर नंदकिशोर आचार्य (कवि, समालोचक एवं अहिंसा विचार के प्रामाणिक विद्वान), प्रोफेसर राजकुमार जैन (वरिष्ठ सोशलिस्ट एवं इतिहास अध्येता) शामिल हुये। इस मौके पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के फाउंडर चांसलर श्री रमाशंकर सिंह जी, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर, छात्र-छात्राएं और ग्वालियर शहर से बड़ी संख्या में आये श्रोतागण मौजूद रहे।

आज दुनिया का वैश्विक पूंजीवाद से मोहभंग हो रहा है: आनन्द कुमार

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर का प्रतिष्ठित अकादमिक आयोजन 10वां डॉ. राममनोहर लोहिया स्मृति व्याख्यान में प्रो-वाइस चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान ने स्वागत भाषण दिया। इसके साथ ही मुख्य वक्ता प्रोफेसर आनन्द कुमार (विशिष्ट प्राचार्य, गोवा विश्वविद्यालय) ने कहा कि मैं कुछ दिनों पहले इस व्याख्यान माला का साक्षी रहा हूं। मेरे लिए सौभाग्य और सम्मान की बात है कि आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर प्रबंधन और श्री रमाशंकर सिंह जी ने मुझे निमंत्रण दिया गया। उन्होंने कहा कि बचपन से ही डॉक्टर राममनोहर लोहिया जी के व्यक्तित्व ने मुझे प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि 1967 से अब तक मैं उनके व्यक्तित्व और चिंतन का अनुयायी रहा हूं।

मुझे लगता है लोहिया जैसे व्यक्तित्व के बारे में व्याख्यान करने में मुझमें पर्याप्त योग्यता नहीं है। उन्होंने कहा कि आज दुनिया का वैश्विक पूंजीवाद से मोहभंग हो रहा है। भूख, निरक्षरता, बेरोजगारी, पर्यावरण संकट से बचने का रास्ता नहीं बचा है। लेकिन इसके लिए लोहिया जी ने अपने विचारों से हमारे समक्ष समाधान रख दिए हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. राममनोहर लोहिया का ग्वालियर से अहम नाता रहा है।

उन्होंने कहा कि आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर है जो लोहिया साहित्य को उनके विचारों को हिंदी में अनुवाद कर जन-जन तक युवा पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। मैंने यह समझा था कि हमारे समाज में अच्छी बातों के लिए स्वीकारता रहेगी, लेकिन यह मेरी गलतफहमी थी: प्रोफेसर आनन्द

मुख्य वक्ता आनन्द कुमार ने कहा कि लोहिया ने अपने अंतिम समय में लिखा था कि मैंने यह समझा था कि हमारे समाज में अच्छी बातों के लिए स्वीकारता रहेगी, लेकिन यह मेरी गलतफहमी थी। मुझे संगठन और विचारों के प्रसार पर भी ध्यान देना चाहिए था।

उनके कार्यक्रमों का सिलसिला और इसका आधार मानव स्वामित्व का दर्शन है। लोहिया की कहानी एक अनोखे राजनीतिक कार्यकर्ता की कहानी है। उन्होंने कहा कि लोहिया का मानना था कि राजनीति एक तरफ मुनाफे का धंधा है, दूसरी तरफपरमार्थ की साधना भी है। उन्होंने कहा कि लोहिया की विरासत में प्रार्थना की गई है कि 'हे भारत माता ! हमें शिव का मस्तिष्क दो, कृष्ण का हृदय दो तथा राम का कर्म और वचन दो।

आईटीएम में मृदाशिल्प 'बस्तर' एवं 'बांकुड़ा' कला का लोकार्पण

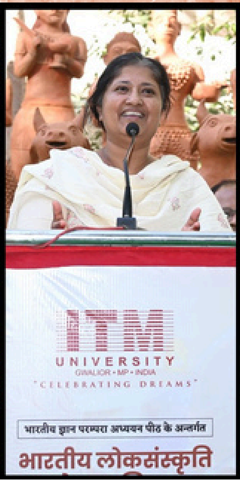

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में भारतीय लोकसंस्कृति के मृदाशिल्प 'बस्तर (छत्तीसगढ़) एवं 'बांकुड़ा' (पश्चिम बंगाल) का लोकार्पण समारोह पूर्वक किया गया। भारतीय ज्ञान परम्परा अध्ययनपीठ के अन्तर्गत संस्थान के तुरारी परिसर स्थित लियोनार्डो द विंची ब्लॉक के पीछे बोधि कुंज में आयोजित इस समारोह में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के डीन अकेडमिक डॉ. रंजीत सिंह तोमर, आईटीएम ग्वालियर की निदेशक डॉ. मीनाक्षी मजूमदार अतिथि के रूप में शामिल हुई। इस अवसर पर क्यूरेटर मुश्ताक खान, सहायक क्यूरेटर मुजाहिद खान, मुख्य कलाकार बाउलदास कुम्भकार, भीखन राम राणा सहित विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर, छात्र-छात्राएं एवं ग्वालियर चंबल से आए कलाप्रेमी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

क्यूरेटर मुश्ताक खान ने कहा कि मिट्टी जैसी चीज दुनिया में कोई नहीं, जो सभी जगह पाई जाती है। मिट्टी का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह निराकार है। शायद मिट्टी के इसी गुण को देखते हुए मनुष्य और ईश्वर दोनों ने ही इसे सृजन का माध्यम बनाया है। उन्होंने कहा कि मिट्टी अमर है। मिट्टी कभी नष्ट नहीं होती और उससे बनाई चीजें नश्वर हैं। उन्होंने कहा कि मंथन के उपरांत मिट्टी के कुम्भ में अमृत को रखा गया था।

लोकार्पण समारोह में संस्थान के डीन एकेडमिक डॉ. रंजीत सिंह तोमर ने कहा कि मिट्टी से तो हर व्यक्ति का नाता है। बचपन में जब हम चलना एवं खेलना शुरू करते हैं तो वहां भी मिट्टी ही होती है और खेलने वाले खिलौने भी मिट्टी के ही होते हैं। भारतीय संस्कृति की जो विविधाएं हैं, इन्हीं सभी कलाओं के माध्यम से ही है। उन्होंने कहा कि कलाओं की शुरूआत घर से ही होती है। उन्होंने बताया कि आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में कला, संस्कृति और भविष्य से जुड़े अहम पहलुओं पर वर्कशॉप, कैंप और कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आपको जागरूक कर सफलता की ओर अग्रसर करना है।

वर्कशॉप से दृण इच्छा शक्ति विकसित होती है: मीनाक्षी

लोकार्पण समारोह में आईटीएम ग्वालियर की डायरेक्टर मीनाक्षी मजूमदार ने कहा कि आईटीएम संस्थान में किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान, कौशल एवं दृण इच्छा शक्ति विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने कहा कि आप यहां आयोजित होने वाले वर्कशॉप में हिस्सा लेंगे तो आप जान पाएंगे कि दूर से सरत दिखने वाली कला कितनी मेहनत के साथ आकार लेती है।

मंशा देवी और शीतला माता परिवार की मूर्तियां रहीं मुख्य आकर्षण का केंद्र

लोक देवी माशा देवी उनके गणधर और छत्तीसगढ़ में बस्तर में प्रसिद्ध शीतला माता परिवार एवं उनके गणधर की टेराकोटा से बनी ढाई फीट से लेकर सात फीट तक की मूर्तियां आकर्षण का केंद्र रहीं। इन मूर्तियो की विशेषता यह है कि यह सभी टेराकोटा से इस तरह निर्मित की गई है, जिससे उन्हें कई वर्षो तक सहेज कर रखा जा सके।

कलाकारों का हुआ सम्मान

समारोह के दौरान प्रख्यात हस्तशिल्प विशेषज्ञा मुश्ताक खान, बाउलदास कुम्भकार और उनके सहयोगी सटू कुम्भकार, महादेव कुम्भकार, कृष्णा कुम्भकार, चंडीदास कुम्भकार, लालमोहन कुम्भकार, गणेश कुम्भकार के अलावा छत्तीसगढ़ से आए प्रसिद्ध मृदाशिल्पी भीखनराम राणा और उनके सहयोगी ईश्वर राणा, अजय राणा, रंजीत, सुबरन, छत्री बघेल, गोरेश्वर चक्रधारी का सम्मान किया गया।

कला को समझने के लिए अपनी दृष्टि विकसित करें : भौमिक

भारतीय संस्कृति कलाओं का समिश्रण है: सहस्त्रबुद्धे

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर भारतीय संस्कृति कलाओं का समिश्रण है। कला वो है जो आपकी कल्पनाओं की अनंत संभावनाओं को उत्पन्न कर दे। कलाकार अपनी कला के माध्यम से अपने विचार रखता है। जिसे लोग अपनी दृष्टि से समझते हैं। यह बात प्रो. स्मिता सहस्रबुद्धे (वाइस चांसलर, राजा मानसिंह तोमर म्यूजिक एंड आर्ट यूनिवर्सिटी ग्वालियर) ने मुख्य अतिथि को आसंदी से संबोधित करते हुए कही। मौका था आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के तुरारी कैंपस स्थित एमजी ब्लॉक के सामने आयोजित 10वें अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार शिविर-2024 (10वां इंटरनेशनल स्कल्पचर सिंपोजियम-2024) के समापन समारोह और एग्जिविसन का।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कलाकार, लेखक और शिल्पकार अशोक भौमिक शामिल हुए। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के चांसलर श्रीमती रूचि सिंह, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ ओमवीर सिंह, डिप्टी रजिस्टार श्री अनिल माथुर सहित देश-विदेश से आए शिल्पकार और छात्र छात्राए आदि विशेष रूप से मोजूद रहे।

लेखक एंव शिल्पकार अशोक भौमिक ने देश और दुनिया में कई कलाकृतियां बनाई जाती हैं। लेकिन कला को आप अपने तरीके से समझिए। इसे समझने की दृष्टि विकसित करनी चाहिये क्योंकि एक कलाकृति को जितने लोग देखते हैं, उनका उस कलाकृति के प्रति दृष्टिकोण अलग हो होता है। आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने कहा कि जिस तरह हम मंदिरों में मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा कराते हैं, इसके बाद अनमोल पत्थरों को हम भगवान के स्वरूप में पूजते हैं।

ठीक उसी प्रकार आज संस्थान में पिछले एक महीने से चल रहे 10वां अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार शिविर के समापन समारोह पर देश और विदेश से आए शिल्पकारों और कलाकारों द्वारा तैयार की गई मूर्ति शिल्पों को प्रदर्शित कर प्राण प्रतिष्ठा की गई है।

भारतीय संस्कृति में कला का विशेष महत्व है, जो हमारी कल्पनाओं की अनंत संभावनाओं को उत्पन्न करती है। कलाकार अपनी कला के माध्यम से अपने विचार रखता है, जिसे लोग अपनी दृष्टि से समझते हैं।

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में आयोजित 10वें अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार शिविर-2024 के समापन समारोह में, प्रो. स्मिता सहत्रबुद्धे ने कहा कि यह विश्वविद्यालय देश में इकलौता है जहां इतने शिल्पकार शिविरों का आयोजन हो चुका है। यहां युवाओं को एक मंच प्रदान किया जा रहा है जहां वे अपनी पहचान बना सकते हैं।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कलाकार, लेखक और शिल्पकार अशोक भौमिक शामिल हुए। आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के चांसलर, प्रो-चांसलर, वाइस चांसलर, रजिस्ट्रार और डिप्टी रजिस्ट्रार सहित देश-विदेश से आए शिल्पकार और छात्र-छात्राएं भी मौजूद रहे।

कलाकृतियों को किया प्रदर्शित

10वें अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार शिविर-2024 में देश-विदेश से आए शिल्पकारों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों को आईटीएम ग्लोबल स्कूल कैंपस और आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के तुरारी कैंपस में विभिन्न स्थानों जिनमें लियोनार्दो द विंची ब्लॉक, महात्मा गांधी ब्लॉक, जेसी बॉस ब्लॉक, किलोस्कर ब्लॉक, स्पोर्ट्स क्लब सहित अन्य स्थानों पर प्रदर्शित किया गया है।

शिल्पकारों ने पत्थरों को दिया अद्भुत आकार

तुर्की से आई अतरराष्ट्रीय शिल्पकार सोंगुल तेलीक मार्बल पत्थर पर भंवर की आकृति तैयार की है। यह आकृति भंवर से उत्पन्न संगीत का प्रतीक है। चिली से आई शिल्पकार लोरिना ओलिवारेस ने लोहे से जीवन की उत्पत्ति से लेकर अंत तक के सफर को दर्शाती एक सात फीट उची आकृति ग्रोइंग तैयार की है। जापान से आए अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार यासुशी होरी ने मकराना के मार्बल पत्थर से बुद्धा की गति का प्रतीक आकृति तैयार की है। तीन हिस्सों में बनाई इस आकृति के एक हिस्से में द्वार या गेट, दूसरे हिस्से में भगवान बुद्धा और तीसरा हिस्सा गति का - प्रतीक है। चिली से आए अंतरराष्ट्रीय शिल्पकार जान लुइस डोर मार्बल पत्थर न से एक विशालकाय घोड़े के सिर की

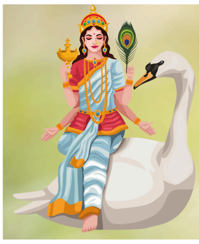

बसंतोत्सव

आईटीएम में बसंतोत्सव पर सात्विक वीणा से हुई स्वर वर्षा

ग्वालियर में 'बसंतोत्सव-2025' का आयोजन संस्थान के तुरारी परिसर में लियोनार्दो द विंची ब्लॉक स्थित उस्ताद अलाउद्दीन खान सभागार में आयोजित किया गया। इस आयोजन में संस्थान के फाउंडर चांसलर रमाशंकर सिंह का 'भारतीय संस्कृति का स्वरूप: कुछ बिन्दु' विषय पर व्याख्यान हुआ। वहीं प्रसिद्ध सात्विक वीणा वादक पंडित सलिल भट्ट ने स्पीक मैके के अंतर्गत सात्विक वीणा वादन की तान छोड़कर भारतीय शास्त्रीय संगीतों के स्वरों की वर्षा की। वहीं तबले पर संगत कौशिक कुंवर द्वारा की गई। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की चांसलर श्रीमती रूचि सिंह, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह सहित संस्थान के विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफ्सर और ग्वालियर शहर व अंचल से बड़ी संख्या में आए संगीत स्वर रसिक मौजूद रहे।

जिसका प्रमाण है, जो प्रत्यक्ष है, वही सत्य है: रमाशंकर सिंह

बसंतोत्सव-2025' में 'भारतीय संस्कृति का स्वरूप: कुछ बिन्दु' विषय पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के फाउंडर चांलर श्री रमाशंकर सिंह जी द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारतीय समाज अनेकता में एकता का एक अनुपन उदाहरण है। वर्तमान में शिष्टाचार की कमी के चलते समाज में देखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि ईद की राम-राम करना हमारा शिष्टाचार था, जिसका अभाव अब समाज में देखने को मिल रहा है। उन्होंने भारतीय तर्कशास्त्र पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तर्कशास्त्र हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है।

पहले कुंभों में आने वाले साधु-संत आपस में तर्क करते थे, लेकिन वर्तमान में अब इसका अभाव देखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि आदि शंकराचार्य ने सात ईश्वर दर्शन किए जो छह संप्रदायों के हैं। वह गणेश जी, विष्णुजी, विष्णु जी, पार्वती जी और सूर्यदेव की पूजा कराते थे। लेकिन देवताओं के गुरु बृहष्पति जी थे, जो छठे संप्रदाय के हैं। जो मानते थे कि जो प्रत्यक्ष नहीं है, जिसका प्रमाण नहीं है तो मैं उसे नहीं मानूंगा। मैं नास्तिक हूं। विज्ञान भी तो यही कहता है कि जिसका प्रमाण है, 'जो प्रत्यक्ष है वही सत्य है।

जीवन में संस्कार आवश्यक हैं: पंडित सलिल भट्ट

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में 'बसंतोत्सव-2025' पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं ने पंडित सलिल भट्ट के साथ सवाल-जवाब कर अपनी जिज्ञाषाओं का शांत किया। इस अवसर परे वीणा वादक पंड़ित सलिल भट्ट छात्र-छात्राओं और युवाओं को संदेश देते हुए कहा कि जीवन में संस्कार आवश्यक है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति और शास्त्रीय संगीत हमारी परंपरा का एक हिस्सा है, जिससे सहेजना हम सभी का दायित्व है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में सिर्फशिक्षित समाज ही नहीं बल्कि संस्कारित समाज गढ़ने की आवश्यकता है। क्योंकि हम शिक्षा प्राप्त करने की ओर तो आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन कहीं न कहीं संस्कारों में पिछड़ते जा रहे हैं। इसलिए युवा शिक्षित होने के साथ साथ ही संस्कारवान भी बनें।

स्वर-ताल वाद्य संवाद सुन रोमांचित हो गए संगीत और स्वर प्रेमी

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में 'बसंतोत्सव-2025' पर स्वर ताल वाद्य संवाद का आयोजन भी किया गया। जहां प्रसिद्ध सात्विक वीणा वादक पंडित सलिल भट्ट ने सात्विक वीणा से स्वरों की तान छेड़ी तो वहीं कौशिक कुंवर द्वारा तबले की थाप पर अनोखी स्वर-ताल की जुगलबंदी की प्रस्तुति दी। इस प्रस्तुति को देख और सुन कर दर्शक दीर्घा में मौजूद संगीत और स्वर प्रेमी रोमांचित हो उठे।

'अपनी सेना को जानें' कार्यक्रम में भारतीय सेना की वीरता और तकनीकी विकास पर जोर

आर्मी हमें देशभक्ति सिखाती है: ब्रिगेडियर झाला

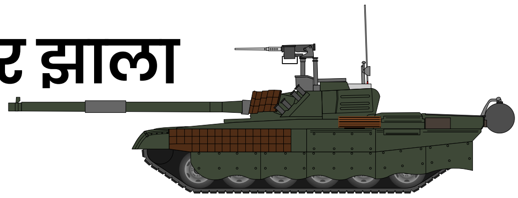

इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह, डीन एकेडमिक डॉ. रंजीत सिंह तोमर, कर्नल सुखविंदर सिंह (कमांडिंग ऑफिसर 3-बटालियन), कमांडर आर्म्स दीपक सिंह भदौरिया (कमांडिंग आफिसर 3-एमपी नेवल यूनिट), लेफ्टिनेंट कमांडर अखिल शर्मा (ईएक्सओ 3-नेवल यूनिट), डीएसडब्ल्यू डॉ. तृप्ति पाठक सहित विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर,एनसीसी केडेट्स मौजूद रहे। इस कार्यक्रम का नेतृत्व एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर डॉ. गौरव कुमार सिंह ने किया आर्मी देश भक्ति सिखाती है: ब्रिगेडियर केडीएस झाला आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की एनसीसी इकाई द्वारा आर्मी डे के अवसर पर 'अपनी सेना को जानें, ए मेगा इवेंट ऑफ एनसीसी, शॉकेस एंड एग्जीवीशन ऑफ वैपन्स एंड शिप मॉडल्स' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ब्रिगेडियर केडीएस झाला (ग्रुप कमांडर एनसीसी हेडक्वार्टर ग्वालियर) ने कहा कि मकर संक्रांति सहित विभिन्न त्योहारों और आर्मी डे की बधाई देते हुए कहा कि आप सब बहुत ही खुशकिस्म हैं जिनके पास विचार के लिए मस्तिष्क है और हम सभी स्वस्थ हैं। दूसरा हम अच्छी जगह पर अच्छे शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। हम जिस देश में पैदा हुए हैं वह भारत है। संस्कारों से समृद्ध, तकनीक से समृद्ध, पूरे विश्व में हमारे पास ही तीनों बल हैं जो वर्ष भर ड्यूटी करते हैं पर थकते नहीं हैं। उन्होंने कहा कि भारत में बोलने की स्वतंत्रता है।

ऐसा अन्य देशों में नहीं है। हमारे यहां अनेकताओं के बावजूद एकता है। आर्थिक स्थिति भी चौथे स्थान पर है। पर हमें अब अपनी शिक्षा, अनुशासन, ईमानदारी ज्ञान सूचना आदि को अपनाकर भारत को भारत बने रहने देना है। आर्मी देश भक्ति सिखाती है।

अपने देश के लिए खुद से ईमानदार होकर कर्तव्यपरायण रहना चाहिए। बॉर्डर पर तैनात अपने बलों की बजह से ही हम इतने सुख से सुविधाओं के बीच रह पा रहे हैं।

उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं को भ्रष्टाचार दूर करने, गद्दारों को कम करने, सकारात्मक सोच बढ़ाने, प्रत्येक व्यक्ति में देश भक्ति का जज्बा बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। एआई तकनीक का प्रयोग सतर्कता से कर लाभ प्राप्त कर सकते है:

वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय एनसीसी इकाई द्वारा आर्मी डे के अवसर पर 'अपनी सेना को जानें, ए मेगा इवेंट ऑफ एनसीसी, शॉकेस एंड एग्जीवीशन ऑफ वैपन्स एंड शिप मॉडल्स' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने अनुशासन, प्रबंधन और देशभक्ति की चर्चा करते हुए आर्मी जैसे ब्रिगेडियर साहब की तरह नेताओं की आवश्यक्ता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आर्मी में भी तकनीकों का औजारों, हथियारों तोपों पर निगरानी के उपयोग किया जा रहा है।

रंगारंग प्रस्तुतियों। आर में दिखाई दी देश यूनि भक्ति की शक्ति

कार्यक्रम में भारत की बेटियां गाने पर ग्रुप डांस की प्रस्तुति दी गई। वही आर्मी पर माइम की प्रस्तुति दी । नाटक के माध्यम से ऑपरेशन ट्रिडेंट, 4 दिसंबर 1971 में बंदरगाह पर कैसे नोसेना ने विजय प्राप्त की , इसे दर्शाया गया। वही गांव के शेर ग्रुप डांस के साथ ही देश भक्ति की शक्ति को प्रदर्शित किया गया।

आर्मी कैंट मुरार की यूनिट्स ने लगाई शस्त्रों की प्रदर्शनी

कार्यक्रम के दौरान शॉकेस एंड एक्सिबिशन ऑफ वैपन्स एंड शिप मॉड्ल्स के तहत शस्त्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस दौरान आर्टनरी गन्स एक्स - 2105 एमएम और 130 एनएम,115 ब्रिगेड इंफेंट्री वेपन्स, स्नाइपर राइफल, एसआईजी 726 राइफल एलएमजी एमएमजी , 72 बटालियन: मोरटर गन्स, राकेट लॉचर्स, एटीजीरम सिंगल इक्यूपमेंट, आदि का प्रदर्शन किया गया।

इबारत-17

गालिब खुद उस्ताद थे और खुद चेले

इबारत-17: आईटीएम यूनिवर्सिटी में देशभर के फनकारों का विद्वत संगम

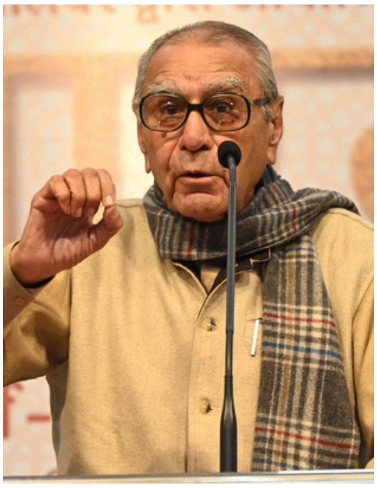

आइटीएम यूनिवर्सिटी की ओर से दो दिवसीय **'इबारत-17'** का आगाज शुक्रवार को 'भारतीय काव्य परम्परा और गालिब' विषय पर विद्वत विमर्श के साथ किया गया। उर्दू के महान कवि गालिब की स्मृति में उस्ताद अलाउद्दीन खान सभागार में आयोजित विद्वत विमर्श में पद्मश्री अलंकृत शीन काफ निजाम, लेखक और आलोचक नन्दकिशोर आचार्य और भारतीय दर्शन के अध्येयता फरहत अहसास शामिल हुए। शीन काफ निजाम ने 'गालिब का तिलिस्म' विषय पर कहा कि गालिब अल्मिया शब्द है। हर पढ़ने वाला पाठक नहीं होता और हर सुनने वाला श्रोता। क्योंकि गालिब कहते हैं कि मुझे तो किताबें नकार देती हैं। उन्होंने तिलिस्म के बारे में बताते हुए कहा कि जादू जिस वजह से असर करता है, उसका कारण तिलिस्म है। शीन काफ ने कहा कि तिलिस्म उजाले का अंधेरा है और असरार पूरा का पूरा अंधेरा है। उन्होंने कहा कि सवाल सास्वत रहता है, मरता तो जवाब है। गालिब कहते हैं कि न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता। इस अवसर पर आइटीएम यूनिवर्सिटी के फाउंडर चांसलर रमाशंकर सिंह, चांसलर रुचि सिंह, प्रो. चांसलर डा. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रो योगेश उपाध्याय, डिप्टी रजिस्ट्रार अनिल माथुर मौजूद रहे। संचालन मदन मोहन दानिश ने किया।

ज्ञान अपने आप में उपलब्धि है, लोग पैकेज के पीछे भागते हैं

वक्ता नन्दकिशोर आचार्य ने 'गालिब और आधुनिकता' विषय पर कहा कि पहले मुझे लगता था कि भारतीय कवियों में सबसे पहले आधुनिक कवि मिर्जा गालिब थे। लेकिन अब मुझे लगता है विश्व भाषाओं के आधुनिक कवि गालिब हैं। उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति अपने आप को बंधन में नहीं बांधता है, तो ये आधुनिकता का पहला लक्षण होता है। उन्होंने गालिब का शेर पढ़ते हुए कहा कि न गुल-ए-नग्मा हूं न पर्दा-ए-साज, मैं हूं अपनी शिकस्त की आवाज...। आचार्य ने कहा कि ज्ञान अपने आप में उपलब्धि है, लेकिन वर्तमान में लोग पैकेज के पीछे भागते हैं।

गालिब के खत उन्हें पूरी तरह समझने के लिए उनकी शायरी जितने ही जरूरी हैं

वक्ता फरहत अहसास ने 'गालिब की सौंदर्यदृष्टि और अस्तित्व बोध' विषय पर कहा कि गालिब खुद उस्ताद थे और खुद चेले। उन्होंने गालिब की चिट्ठी पढ़कर सुनाई और कहा कि गालिब ने अपने दोस्तों, शागिदों और नवाबों को बहुत सारे खत लिखे। ये खत उन्हें पूरी तरह समझने के लिए उनकी शायरी जितने ही जरूरी हैं। उन्होंने कहा कि इन खतों में खुशियां हैं, करुणा है, बेबसी है, आग्रह है, पूर्वाग्रह है, देह की तकलीफें हैं, मन की मसर्रतें हैं, आबोहवा के अहसास हैं, मेह है, शराब है, मुर्गी के अंडे के बराबर गिरने वाले ओले हैं, बरसातें हैं, खेत हैं।

गालिब को जितना पढ़ा जाए वो अलग रंग में नजर आते हैं

शायर मदन मोहन दानिश ने संचालन करते हुए श्रोताओं से पूछा कि गालिब कौन है, कोई बतलाओ या हम बतलाएं...। उन्होंने कहा कि गालिब एक ऐसी महान शख्सियत हैं, जिन्हें जितना पढ़ा और सुना जाए वो हमेशा ही अलग रंग में नजर आते हैं। उन्होंने कहा कि उनकी शायरी में आधुनिकता का बोध था।

इबारत-17

गालिब की गजलों की सजी खूबसूरत शाम

सुकून ए दिल के लिए कुछ अहतेमाम करूं, जरा नजर तो मिले फिर उन्हें सलाम करूं.....मुझे तो होश नहीं आप मशविरा दीजिए, कहां से छेड़ू फसाना कहां तमाम करूं... ये शेर जैसे ही प्रसिद्ध गायक सुधीर नारायण ने नाद मुक्ताकाश के मंच से पढ़ा तो दर्शक दीर्घा में मौजूद दर्शकों ने तालियों की गडगडाहट के साथ उनका अभिवादन किया। मौका था आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की ओर से उर्दू कविता का वार्षिक प्रतिष्ठा आयोजन इबारत-17 के तहत उर्दू के महान कवि गालिब की स्मृति में गजलों से भरी खूबसूरत शाम का। उनके साथ वोकल सपोर्ट खुशी सोनी, ढोलक पर राजू पांडे, तबले पर राज मैसी, की-बोर्ड पर देशदीप और गिटार पर रमेश चंद्र ने संगत की। कार्यक्रम में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के फाउंडर चांसलर रमाशंकर सिंह, चांसलर रूचि सिंह प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान,वाइस चांसलर प्रो. योगेश उपाध्याय, पद्मश्री अलंकृत शीन काफ निजाम आदि मौजूद रहे। वहीं कार्यक्रम का संचालन डॉ. कल्पना मिश्रा ने किया।

- **नुक्ता-चीं है गम-ए-दिल उस को सुनाए न बने क्या बने बात जहां बात बनाए न बने। मैं बुलाता तो हूं उसको मगर ऐ जज्बा-ए-दिल, उस पे बन जाए कुछ ऐसी कि बिन आए न बने...**
- **कोई उम्मीद बर नहीं आती, कोई सूरत नजर नहीं आती। मौत का एक दिन मुअश्य्यन है, नींद क्यूं रात भर नहीं आती...**
- **हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले, बहुत निकले मिरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले डरे क्यूं मेरा कातिल क्या रहेगा उस की गर्दन पर, वो खू जो चश्म-ए-तर से उम्र भर यूं दम-ब-दम निकले...**
- **होश वालों को खबर क्या बे-खुदी क्या चीज है, इश्क कीजे फिर समझिए जिंदगी क्या चीज है। उनसे नजरें क्या मिलीं रौशन फजाएं हो गईं, आज जाना प्यार की जादूगरी क्या चीज है...**
- **तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो, क्या गम है जिस को छुपा रहे हो, आंखों में नमी हंसी लबों पर, क्या हाल है क्या दिखा रहे हो...**

मैं उन्हें छेड़ूं और कुछ न कहें...

महान कवि गालिब की स्मृति में गजलों से भरी खूबसूरत शाम में गजल गायक सुधीर नारायण ने गजलों का तराना छेडा। उन्होंने गजल मैं उन्हें छेड़ू और कुछ न कहें, चल निकलते जो मय पिए होते। कहर हो या बला हो जो कुछ हो, काश के तुम मिरे लिए होते। मेरी किस्मत में गम गर इतना था, दिल भी या-रब कई दिए होते। आ ही जाता वो राह पर 'गालिब, कोई दिन और भी जिए होते। इन गजलों से सजी खूबसूरत शाम की खासियत यह रही कि गजल गायक सुधीर नारायण गजलों को सुमधुर संगीत मय गाने के साथ-साथ गजलों में कहे गए एक-एक शब्द का अर्थ भी युवाओं को समझाते जा रहे थे।

इबारत-17

'इबारत' में महके मोहब्बत के कोमल और मद्धम सुर

अक्स हैं उनके आसमानों पर, चांद तारे तो घर में रहते हैं....

ये बसंत की मुकद्दस शाम थी और इस शाम की नम मिट्टी भी अपनी तहों में दिलकश खुशबू का समंदर दवाए बैठी थी। बाद-ए-शब झूम रही थी और मौसम भी पूरी तरह साज़गार था। चांद की सरपरस्ती में सितारे भी लुत्फ अंदोज होने को बेकरार थे। ऐसे खुशगवार माहौल को शेरो-सुखन की महफिल 'इबारत' ने और नशीला बना दिया। हमारी कद्रों, मान्यताओं और कल्पनाओं ने समय की शिला पर सोलह बरस पहले जो इबारत लिखी थी, आज फिर इसी इबारत के लम्हे मुस्कुरा रहे थे। इन लम्हों में थे - मोहब्बत के कोमल और मद्धम सुर और इंसानियत के अक्स।

ये तमाम मंजरकशी है प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान आईटीएम विविद्यालय के उर्दू अदब के सालाना कार्यक्रम 'इवारत' की। सत्रहवें सोपान पर पहुंचे इस कार्यक्रम में उर्दू अदब के मकबूल शायरों ने समकालीन उर्दू शायरी के ऐसे रंग भरे कि अदबी कायनात की पोशीदा खूबसूरती के परदे हटते चले गए। एक बार फिर ये बात साबित हुई कि 'इबारत' लिखी हुई ही सब कुछ नहीं, बल्कि बगैर लिखी हुई वात भी असरदार होती है। खैर, इबारत की ये पेशकश भी खूब जमी। शायर थे कुल जमा पांच। जोधपुर से आए पद्मश्री अलंकृत शीन काफ निजाम, दिल्ली से फरहत अहसास, मुंबई से डॉ. राजेश रेड्डी, बरेली से शारिक कैफी और ग्वालियर के मदन मोहन मिश्र 'दानिश'।

शुरूआती औपचारिकता के बाद जब शेरो-सुखन का दौर शुरू हुआ तो शुरूआत ग्वालियर के मदन मोहन 'दानिश' ने ही की। वे इस कार्यक्रम के संयोजक भी थे। उन्होंने कई अच्छी गज़लें पढ़ी। देखें उनकी गजल के ये

शेर-नफरतों से लड़ों प्यार करते रहो, अपने होने का इजहार करते रहो।
इतने अच्छे बनोगे तो मर जाओंगे, थोड़े दुश्मन भी तैयार करते रहो।
जिन्दगी से मोहब्बत करो टूटकर, मौत का काम दुश्वार करते रहो।

समाज में गैर बराबरी की बात करते हुए उन्होंने कहा-

और क्या आखिर तुझे ऐ जिन्दगानी चाहिए, आरजू कल आग की थी आज पानी चाहिए। ये कहां की रीत है जागे कोई सोये कोई, रात सबकी है तो सबको नींद आनी चाहिए।

महफिल के दूसरे शायर शारिक कैफी ने भी बेहतरीन गजलें व नज्में पढ़ी। उनका रचना संसार जिन्दगी और रिश्तों के नाजुक अहसासों को बड़े सलीके से पेश करता है। देखें एक नज्म-

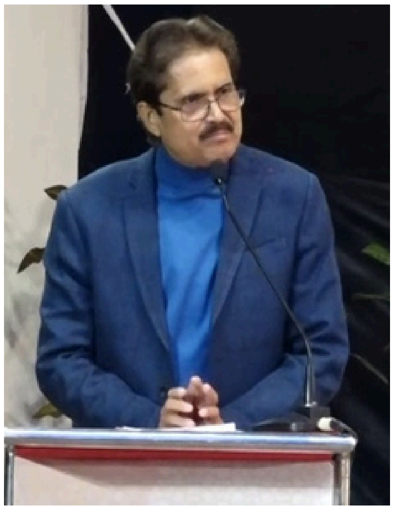

पापा/तुम मर जाओ न पापा/मैं तुमसे नफरत करता हूं/ कश तुम लेते हो खांसी मुझको आती हैं/दिल के दौरे तुम्हें नहीं/मुझको पड़ते हैं/आखिर कब तक/रात में उठकर/लाइट जलाकर/देखूंगा मैं सांस तुम्हारी/ कब तक मेरी टीचर/मुझको टोकेगी/ गुमसुम रहने पर/ कैसे बतलाऊं/मैं कितना डर जाता हूं/जब मेरी रिक्शा मुड़ती है/ घर वाले रस्ते पर/आज भी कम बैचेन नहीं मैं / मोड़ तो बस आने वाला है/चैन पड़ गया/आज भी मेरे घर के आगे भीड़ नहीं है/यानी... आज भी शायद सब कुछ ठीक है घर में यानी तुम जिन्दा हो पापा।

मुंबई से आए राजेश रेड्डी ने भी बेहतरीन शेर पढ़े। रेड्डी जिन्दगी की आम समस्याओं व संवेदनाओं के शायर है। देखें उनके कुछ शेर-

किसी दिन जिन्दगी में करिश्मा क्यूं नहीं होता, मैं हर दिन जाग तो जाता हूं जिन्दा क्यूं नहीं होता। मिरी इक जिन्दगी के कितने हिस्सेदार हैं, लेकिन किसी की ज़िन्दगी में मेरा हिस्सा क्यूं नहीं होता। संवेदना की सतह पर उनका ये शेर भी देखें-शाम को जिस वक्त खाली हाथ घर जाता हूं मैं मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूं मैं। * दिल्ली से आए फरहत अहसास अपने वैचारिक फैलाव और अनुभवों की विशिष्टता के लिए जाने जाते में हैं। देखें उनके कुछ शेर- जंगलों को काटकर कैसा गजब हमने किया शहर जैसा एक आदमखोर पैदा कर लिया। और... दिल के किसी उदास कौने से आई है चेहरे पे जो बहार है रोने से आई है।

आईटीएम यूनिवर्सिटी में 'अनेकता में एकता थीम पर दो दिवसीय एनुअल फंक्शन आयोजित

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में दो दिवसीय एनुअल फंक्शन का आयोजन किया गया। जहां छात्र-छात्राओं में शास्त्रीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत, भांगड़ा, घूमर, वीहू और रास सहित अनेकता में एकता की विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर सभी के मन को प्रफुल्लित किया। संस्थान के नाद एम्फीथिएटर में अनेकता में एकता थीम पर आयोजित एनुअल फंक्शन में मुख्य अतिथि के रूप में संजय बिंदल (एक्स वीपी, जेके टायर), राजेश खन्ना (वीपी ऑपरेशन एंड यूनिट हैड, एसआरएफ वाइस चेयरमैन ग्वालियर जोन), अविनाश मिश्रा (एक्स वीपी गोदरेज, नेशनल प्रेसिडेंट क्यूसी फोर्म ऑफ इंडिया), समिरन नाग (एवीपी आदित्य बिरला ग्रासिम), अभिषेक प्रियदर्शी (क्लस्टर एचआर हेड, गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड), आशीष वैश्य (चेयरमैन सीआईआई मप्र) शामिल हुए। कार्यक्रम में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की चांसलर श्रीमती रूचि सिंह, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह, डीन अकैडमिक रंजीत सिंह तोमर, डॉ. सोनिया जौहरी, डीएसडब्ल्यू तृप्ति पाठक सहित विभिन्न विभागों के डीन, एचओडी, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने प्रस्तुत की एनुअल रिपोर्ट आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के एनुअल फंक्शन में रंगारंग आयोजन का शुभारंभ मां सरस्वती और महाराष्ट्रीय गणेश वंदना के साथ किया किया गया।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलित किए गए। कार्यक्रम के दौरान संस्थान के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने एनुअल रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट में उन्होंने आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में संचालित विभिन्न स्कूल, संकाय और कोर्स की जानकारी देने के साथ ही छात्र-छात्राओं को उपलब्ध कराई जा रहीं सुविधाओं आदि के वारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

लावनी, भांगड़ा, घूमर, वीहू और रास की रही धूमआईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में दो दिवसीय एनुअल फंक्शन के अवसर पर संस्थान के सिथौली परिसर स्थित नाद एम्फीथिएटर के मंच पर छात्र-छात्राओं ने एक से बढ़कर एक सांस्कृति प्रस्तुतियां देकर अनेकता में एकता की मिसाल पेश की। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने महाराष्ट्रीयन गणेश वंदना और लावनी नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति देकर सभी का मन मोह लिया। वहीं पंजाबी भांगड़ा, राजस्थानी घूमर, आसाम का वीहू नृत्य और उत्तर प्रदेश के महारास की मनमोहन प्रस्तुतियां छात्र-छात्राओं द्वारा दी गई। वहीं अंत में छात्र-छात्राओं ने 'जहां डाल डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा वह भारत देश है मेरा' गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया। अफ्रीकन फोक डांस का चला जादू आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में एनुअल फंक्शन के अवसर पर संस्थान में अध्ययनरत विदेशी छात्र-छात्राओं ने भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी संस्कृति का परिचय दिया। इस दौरान विदेशी छात्र-छात्राओं ने अफ्रीकन फोक डांस कर उपस्थित अतिथियों और छात्र-छात्राओं पर अपना जादू चलाया।

म्यूजिकल ड्रामाः श्रीकृष्ण ने चुराया माखन, किया कंस का वध

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के नाए एम्फीथिएटर के मंच पर छात्र-छात्राओं ने श्रीकृष्ण लीलाओं पर आधारित म्यूजिकल ड्रामा प्रस्तुत किया। इस दौरान छात्र-छात्राओं ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में मैया यशोदा को श्रीकृष्ण द्वारा अपनी नटखटपन से सताना, प्रेम करना, माखन चोरी करना, कालिया मर्दन, भगवान इंद्रदेव का घमंड तोड़ना सहित मामा कंश का वध करने जैसी महत्वपूर्ण दृश्यों का मंचन किया गया। वहीं इस म्यूजिकल ड्रामा के अंत में भगवान श्रीकृष्ण, राधारानी और गोविकाओं के साथ महारास होली का दृश्यांकन बड़े ही रोचक अंदाज में किया गया।

ITM World Music Festival

आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2.0 'में रही रेट्रो हिंदी-इंग्लिश म्यूजिक की धूम

आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर का सिथौली परिसर स्थित नाद एम्फीथियेटर। जहां आकर्षक मध्यम रोशनी में रेट्रो हिंदी-इंग्लिश की लाइप प्रस्तुति देते क्रूनर्स कॉलेक्टिव ग्रुप के कलाकार। फ्यूजन सॉन्ग पर मस्ती में थिरके छात्र-छात्राएं और युवाओं का अंदाज कुछ अलग ही नजर आया।

यह अवसर था दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2.0 के शुभारंभअवसर का। इस मौके पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की चांसलर श्रीमती रुचि सिंह चौहान, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय सहित सभी संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, शैक्षणिक और कार्यालयीन स्टॉफ सहित संस्थान में अध्ययनरत देशी और विदेशी स्टूडेंट्स बड़ी संख्या में मौजूद रहे। आईटीएम यूनिवर्स (आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर, आईटीएम ग्वालियर, आईटीएम ग्लोबल स्कूल और आईटीएम हॉस्पिटल) द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2025' के प्रथम दिवस क्रूनर्स कॉलेक्टिव ग्रुप के आर्टिस्ट प्रणव सहगल (वोकल्स), एशले वाज़ (कीबोर्ड), मुस्तफ कमाल पाशा (बास), विपुल मल्होत्रा (ड्रम) और एल्टन फ्नांडिस (सैक्सोफोन) स्वाति (वोकल्स) जोशुआ (कीबोर्ड और वोकल्स) ने हिस्सा लेकर पुराने और नये हिंदी व इंग्लिश के गानों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां अपने ही अंदाज में दीं।

आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2025 का शुभारंभ शांत 7 बजे से हुआ। जहां क्रूनर्स कॉलेक्टिव ग्रुप ने नृत्य संगीत का इतिहास थीम पर 'समर 69, गेट लकी, इलाही, सामने ये कौन आया गानों को अपने ही अंदाज में प्रस्तुत किया। बैंड ने पुराने रेट्रो सॉन्ग के साथ-साथ युथ के गाने भी गाये। इसके अलावा इंग्लिश सॉग्स पर विद्यार्थियों ने डांस किया।

ITM World Music Festival

देश और दुनिया के संगीत व म्यूजिक से विद्यार्थियों को परिचित कराना वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का उद्देश्य है :

प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान - सैंटियागो ने बचाटा और मेरे नगे की लाइव सिंगिंग कर युवाओं में भरा जोश कैरेबिनय साउंड और पॉप-रॉक के साथ लगा फ्यूजन का तड़का भारतीय, अमेरिकी लैटिन, कोलंबिया सहित विभिन्न देशों की संस्कृति संगीत के माध्यम से देखने को मिली

आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर के सिथौली परिसर स्थित नाद एम्फीथियेटर में आयोजित दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड-म्यूजिक फेस्टिवल-2025' का समापन अबेकोराओ कोलंबियन बैंड्स ग्रुप की धमाकेदार सॉन्ग और म्यूजिक की प्रस्तुति के साथ हुआ। फेस्टिवल के समापन अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर की चांसलर श्रीमती रुचि सिंह चौहान, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान सहित सभी संकायों के डीन, विभागाध्यक्ष, शैक्षणिक और कार्यालयीन स्टॉफसहित संस्थान में अध्ययनरत देशी और विदेशी स्टूडेंट्स बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

सैंटियागो ने बचाटा और मेरेनगे की लाइव सिंगिंग कर युवाओं में भरा जोश

आईटीएम यूनिवर्स (आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर, आईटीएम ग्वालियर, आईटीएम ग्लोबल स्कूल और आईटीएम हॉस्पिटल) द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2025' के द्वितीय दिवस यानी रविवार को कोलंबियन बैंड्स ग्रुप अबेकोराओ के कलाकार सैंटियागो रामिरेज ने हाथों में गिटार थामकर लाइव सिंगिंग की। आईटीएम यूनिवर्स के मंच पर जैसे ही हाथों में गिटार थामकर सैंटियागो ने रोमांटिक गीतों के लिए प्रसिद्ध बचाटा की लाइव सिंगिंग की तो दर्शक दीर्घा में मौजूद विद्यार्थी उनके साथ थिरक उठे। वहीं उन्होंने मेरेनगे की रोमांटिक और जोशीली धुनों के साथ एक से बढ़कर एक संगीत की प्रस्तुतियां दीं, जिससे उपस्थित छात्र-छात्राएं और युवा रोमांचित हो उठे। कैरेबिनय साउंड और पॉप-रॉक के साथ लगा फ्यूजन का तड़का आईटीएम यूनिवर्स द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2.0' के अवसर पर कोलंबियन बैंड्स ग्रुप अबेकोराओ के कलाकारों ने लैटिन संगीत और बैंड की जबदस्त प्रस्तुति दी। बैंड्स ग्रुप में शामिल कलाकारों ने कैरेबियन साउंड और पॉप-रॉक के साथ फ्यूजन का तड़का लगाकर उपस्थित सभी विद्यार्थियों और युवाओं को थिरकने पर मजबूर कर दिया।

भारतीय, अमेरिकी लैटिन, कोलंबिया सहित विभिन्न देशों की संस्कृति संगीत के माध्यम से देखने को मिली

आईटीएम यूनिवर्स द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2.0' के अवसर पर कोलंबियन बैंड्स ग्रुप अबेकोराओ के कलाकारों जिनमे अल्मुडेना लॉन्गारेस (कीज), फ्लोरेंसिया मार्टिनेज (वोकल), एंजेलिका पतिनो (वोकल), बेलेन ओजेडा (सैक्सोफोन), प्रियांग (ट्रंपेट), हेल्मंट (परकशिन), वैभव (परकशिन), चेवांग (ड्रम्स), राजहंसम (बास) और सैंटियागो (वॉक और गिटार) पर संगत की। इस दौरान कलाकारों ने साल्सा की लयबद्धता, कुंबियान की पारंपरिक झलक और रेगेतॉन की आधुनिक बीट्स की प्रस्तुतियां देकर उपस्थित युवाओं, विद्यार्थियों और दर्शकों को रोमांचित कर दिया। इस दौरान भारतीय संगीत के साथ-साथ अमेरिकी लैटिन और कोलंबिया के संगीत और विभिन्न देशों के संगीत व धुनों की झलक देखने और सुनने को मिली।

देश और दुनिया के संगीत व म्यूजिक से विद्यार्थियों को परिचित कराना वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का उद्देश्य है:प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान

आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल-2025 के समापन अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान ने कहा कि आईटीएम वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का उद्देश्य आपको देश ही नहीं दुनिया के संगीत और म्यूजिक से परिचित कराना है। क्योंकि संगीत और म्यूजिक कोई भी हो वह अपनी छाप छोड़ ही जाता है। इन दो दिनों में क्रूनर्स कॉलेक्टिव ग्रुप और अबेकोराओ ग्रुप्स ने - आईटीएम यूनिवर्स में म्यूजिक की जो छाप छोड़ी है वह वाकई अद्भुत है।

Snapshots of ITM Sculpture

17 वां संगीत सम्मलेन

'राग पुरिया कल्याण' स्वरों के साथ हुआ आईटीएम संगीत सम्मेलन (17) का आगाज

'नाद' एम्फीथियेटर का मंच और आसमान में टिम टिमाते सितारे एवं चांद की मध्यम रोशनी के बीच शास्त्रीय गायिका विदुषी सावनी शेंडे (पुणे) द्वारा शास्त्रीय संगीत की स्वर लहरियां संगीत रसिकों के मन को आनंदित कर गई। वहीं विक्रम घोष (कोलकाता) ने तबला वादन कर सभी रसिकों और ग्वालियरवासियों को वाह उस्ताद करने पर विवश कर दिया। मौका था, आईटीएम यूनिवर्स (आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर, आईटीएम ग्वालियर, आईटीएम ग्लोबल स्कूल और आईटीएम हॉस्पिटल) द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा अध्ययन पीठ के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय आईटीएम संगीत सम्मेलन (17) के शुभारंभ अवसर का। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के फाउंडर चांसलर श्री रमाशंकर सिंह जी, चांसलर श्रीमती रुचि सिंह, प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय एवं रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह सहित बड़ी संख्या में युवा और ग्वालियर शहर से आए संगीत रसिकों ने शास्त्रीय संगीत का आनंद लिया।

विदुषी सावनी शेंडे ने शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति देकर किया रसिकजनों को मंत्रमुग्ध आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर द्वारा दो दिवसीय आईटीएम संगीत सम्मेलन (17) में शुक्रवार को प्रथम सत्र के दौरान किराना घराने से संबंधित और प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय गायिका विदुषी सावनी शेंडे (पुणे) ने राग पुरिया कल्याण के साथ आगाज किया। इसमें उन्होंने ख्याल संगीत के साथ ठुमरी, तराना के साथ-साथ होली की बंदिशों के साथ शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत की मन मोहन प्रस्तुतियां देकर दर्शक दीर्घा में उपस्थित रसिकजन और ग्वालियर शहरवासियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके अलावा उन्होंने राग श्याम कल्याण, राम यमन, राग तिलक कामोद में तीन ताल, एक ताल और झाला अलाप में निबद्ध संगीत की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दीं। गायिका विदुषी सावनी शेंडे के साथ तबले पर अरुण और हारमोनियम पर राहुल गोले ने संगत की।

गुरु में निष्ठा रखनी होगी तभी आपको रागदारी समझ आयेगी: विदुषी सावनी शेंडे

आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर द्वारा दो दिवसीय आईटीएम संगीत सम्मेलन (17) में शुक्रवार को किराना घराने से संबंधित और प्रतिष्ठित भारतीय शास्त्रीय गायिका विदुषी सावनी शेंडे (पुणे) ने कहा कि मैं आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर में दूसरी बार आई हूं, मुझे यहां आकर बहुत प्रसन्नता होती है। क्योंकि यहां की ऑडियंश में शास्त्रीय संगीत हो या उप शास्त्रीय संगीत वह हर बात सुनने के लिए बेचेन रहते हैं। उन्होंने कहा कि शास्त्रीय संगीत का आनंद लेने के लिए युवाओं को सार सुनने की आदत डालनी चाहिए। क्योंकि जब तक लय की आदल नहीं लगेगी तक आप अच्छी तरह का आनंद नहीं ले पाओगे। उन्होंने कहा कि आपको ख्याल संगीत में विलंबित लय में डूबने की मानसिकता होनी चाहिए। उन्होंने युवाओं को संदेश देते हुए कहा कि शास्त्रीय संगीत में आप कॅरियर बनाना चाहते हैं तो आपको गुरु पर श्रद्ध रखनी होगी। शास्त्रीय संगीत में पारंगत होने के लिए कोई शॉर्टकट नहीं होता है।

विक्रम घोष के तबले की थाप पर नसरुख ताल के साथ गूंज उठा आईटीएम

आईटीएम यूनिवर्स ग्वालियर द्वारा दो दिवसीय आईटीएम संगीत सम्मेलन (17) में शुक्रवार को द्वितीय सत्र का आगाज भारतीय शास्त्रीय संगीत और फ्यूजन संगीत के जाने-माने कलाकार और तबला बादक विक्रम घोष (कोलकाता) ने नौ मात्रा में निबद्ध नसरुख ताल के साथ किया। इसके बाद उन्होंने एक साथ दो तबलों और हैंडसोनिक के माध्यम से तीन ताल, झाला अलाप, रूपक, एकताल और दादरा की प्रस्तुति लयकारी वादन, तिहाई, कायदा, रेला, गत और परन आधारित मध्यम लय, द्रुत गति में निबद्ध प्रस्तुति दी। विक्रम घोष ने अपने तबले की थाप के साथा मधुर स्वरों से युवाओं को वाह उस्ताद करने पर मजबूर कर दिया। उनके साथ हारमोनियम पर सनातन गोस्वामी ने संगत की।

17 वां संगीत सम्मेलन

राग मारू बिहाग से सजी संगीत सम्मेलन की खुशनुमा शाम

आइटीएम यूनिवर्स के कैंपस स्थित नाद एम्फीथियेटर के मंच पर शास्त्रीय संगीतज्ञ डा. पंडित राजा काले (मुंबई) ने अपनी सुरीली आवाज में शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुति से शाम को खुशनुमा बना दिया। वहीं उस्ताद शाहिद परवेज (मुंबई) ने सितार की तान छेड़कर शास्त्रीय संगीत के रागों की स्वर लहरियों की झंकार से दर्शक दीर्घा में मौजूद सभी रसिक जन को झंकृत कर दिया। मौका था, शनिवार को आइटीएम यूनिवर्स (आइटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर, आइटीएम ग्वालियर, आइटीएम ग्लोबल स्कूल और आइटीएम हास्पिटल) द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा अध्ययन पीठ के अंतर्गत आयोजित दो दिवसीय आइटीएम संगीत सम्मेलन के समापन अवसर का।

हमरे माइरी गुण सागर.... डा. पंडित राजा काले: ग्वालियर घराने की परंपरा से दीक्षित विख्यात शास्त्रीय संगीतज्ञ डा. पंडित राजा काले (मुंबई) ने अपनी मधुर वाणी से राग मारू बिहाग की जैसे ही प्रस्तुति दी तो दर्शकदीर्घा में मौजूद रसिकजन झूम उठे। इसके बाद उन्होंने राग पुरिया, श्याम कल्याण की प्रस्तुति दी। उन्होंने बंदिश सुमिरा तोरो नाम..., की मनमोहक प्रस्तुति दी। फिर उन्होंने हत एक ताल में निवद्ध बंदिश गंगा के संग सरिता...। फिर द्रुत एक ताल में निबद्ध तराना बंदिश हमरे माइरी गुण सागर की प्रस्तुति दी।

भास्त्रीय शास्त्रीय संगीत का कोई सानी नहीं है

इस अवसर डा. पंडित राजा काले (मुंबई) ने कहा कि मैं वर्ष 1971 में पहली बार ग्वालियर में तानसेन समारोह में प्रस्तुति देने आया था। भारतीय शास्त्रीय संगीत का विश्व में काई सानी नहीं है। उन्होंने युवा पीढ़ी को संदेश देते हुए कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपना करियर बनाना है तो पूरी मेहनत और साधना करनी आना चाहिए।

सितार से छेड़ी राग रागेश्वरी स्वरों की मधुर तान

द्वितीय सत्र में प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद शाहिद परवेज (मुंबई) ने सितार का वादन करते हुए राग रागेश्वरी की कर्णप्रिय प्रस्तुति दी। उन्होंने राग रागेश्वरी में आलाप जोड़ और झाला की रूपक ताल और तीन ताल में प्रस्तुति दी। इसके साथ ही उन्होंने संगीत की स्वर लहरियों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर संगीत रसिकों का मन मोह लिया।

अपनी संस्कृति को भी न भूलें: उस्ताद शाहिद परवेज

सितार वादक उस्ताद शाहिद परवेज (मुंबई) ने कहा कि बालीवुड हो या हालीवुड किसी से भी हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत की तुलना नहीं की जा सकती है। अगर पश्चिम की अच्छी चीजें हैं तो इन्हें अपनाने में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन अपनी संस्कृति को भी न भूलें। हमारी भारतीय संस्कृति को पूरी दुनिया बड़े आदर के साथ मानती है।

आईटीएम यूनिवर्सिटी के छात्रों को मिलेगा यूके में पढ़ाई और इंटर्नशिप का मौका, एमओयू पर हुए हस्ताक्षर

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर ने शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए डी. मोंटफोर्ट यूनिवर्सिटी, यूके के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर (डॉ.) योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह, डीन इंटरनेशनल कोऑपरेशन डॉ. श्याम आकाशे, डायरेक्टर ट्रेनिंग ऑग्मेंटेशन एंड प्लेसमेंट अर्पित सिंह चौहान और डी. मोंटफोर्ट यूनिवर्सिटी यूके के पार्टनरशिप डेवलपमेंट मैनेजर पॉल ओवरटन, कैरियर एडवाइजर लुसिया पेरेडेस सुआंजेस मौजूद रहे।

पीजी डिग्री और इंटर्नशिप के अवसर

एमओयू के अंतर्गत छात्रों को पोस्ट ग्रेजुएशन (PG) डिग्री प्राप्त करने के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर की इंटर्नशिप करने का अवसर भी मिलेगा। इससे वे न केवल अपनी शैक्षिक योग्यता को मजबूत कर सकेंगे बल्कि अपने करियर में भी नई ऊंचाइयों को छू सकेंगे।

आईटीएम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. योगेश उपाध्याय ने कहा, "यह साझेदारी शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाएगी और हमारे छात्रों को वैश्विक अवसरों से जोड़ेगी।" डी. मोंटफोर्ट यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधियों ने भी इस सहयोग पर उत्साह व्यक्त किया और इसे दोनों संस्थानों के लिए लाभदायक बताया।

तकनीकी शिक्षा और शोध में होगा बड़ा विस्तार

शुक्रवार को होटल सेंट्रल पार्क में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) योगेश उपाध्याय ने बताया कि यह एमओयू दोनों विश्वविद्यालयों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि आईटीएम यूनिवर्सिटी हमेशा से ही छात्रों को उच्च स्तरीय तकनीकी शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध रही है, और यह समझौता इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

इस समझौते के माध्यम से दोनों संस्थानों के छात्र एक-दूसरे के कोर्स में सीधे प्रवेश ले सकेंगे, जिससे उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा, ट्रांसनेशनल एजुकेशन (TNE) के क्षेत्र में भी दोनों संस्थान मिलकर कार्य करेंगे, जिससे छात्रों को वैश्विक स्तर पर नई संभावनाएं मिलेंगी।

शिक्षा, अनुसंधान और फेकल्टी एक्सचेंज से होगा लाभ

एमओयू के तहत दोनों संस्थानों के विशेषज्ञों का परस्पर लाभ मिलेगा और फेकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम को भी बढ़ावा दिया जाएगा। इससे न केवल शिक्षण गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि छात्रों को अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रोफेसरों से सीखने का अवसर भी मिलेगा।

इस साझेदारी का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि दोनों विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से अंतरराष्ट्रीय शोध परियोजनाओं में भाग लेंगे। इससे छात्रों और शोधकर्ताओं को नवीनतम तकनीकी अनुसंधान में सहयोग करने और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने का अवसर मिलेगा।

छात्र नालेज गेन करने के साथ स्किल्स पर फोकस करें, कंपनियों की यही डिमांड

सेनर्जी-2.0 आईटीएम यूनिवर्सिटी में जुटे देशभर की कंपनियों के एचआर लीडर्स व प्रतिनिधि

आइटीएम यूनिवर्स ग्वालियर (आइटीएम यूनिवर्सिटी और आइटीएम ग्वालियर) प्रजेंट्स 'सेनर्जी-2.0 का आयोजन 'व्हेयर एचआर लीडर्स कनेक्ट एंड इंस्पायर' विषय पर किया गया। इस आयोजन में देश और दुनिया की प्रतिष्ठित कंपनियों से एचआर प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। आइटीएम के वाइस चांसलर प्रो. योगेश उपाध्याय ने बताया कि 'सेनर्जी-2.0' कार्यक्रम संस्थान के तुरारी और सिथौली दोनों ही कैंपस में एक साथ किया गया। जहां देश और दुनिया की प्रतिष्ठित 14 कंपनियों के प्रतिनिधियों ने सात-सात एक्सपर्ट्स का पैनल बनाकर छात्रों के साथ ग्रुप डिस्कशन किया।

स्किल के बिना आप अधूरे हैं

तुरारी कैंपस में अभय कपूर (ग्रुप सीएचआर), नितिन खिंदरिया (सीएचआरओ, ओएसएम), रुनु जैन (एवीपी एचआर, बिरलासोफ्ट), गौरव सोनी (एसोसिएट वीपी, कोफोर्ज), संजय राय (वीपी एचआर) सहित प्रतिष्ठित कंपनियों के सात एचआर प्रतिनिधियों ने छात्रों के साथ पैनल डिस्कसन किया।

पैनलिस्ट ने कहा कि छात्रों को नालेज होना जरूरी है, लेकिन स्किल बहुत जरूरी है। क्योंकि नालेज होते हुए भी आप स्किल के बिना अधूरे ही रहते हैं। इसलिए नालेज के साथ स्किल्स पर ज्यादा फोकस करना चाहिए।

कार्पोरेट सेक्टर में प्रैक्टिकल नालेज बहुत मायने रखती है:

'अप स्कैलिंग एंड री स्कैलिंग प्रिपेयरिंग स्टूडेंट्स फार डायनमिक करियर' विषय पर प्रभंजन प्रसन (हेड टेलेंट एक्यूसेशन), लवनम अंवाला (एक्स. नेशनल हेड विप्रो), डा. रंजिथ टीपी (हेड आफ टैलेंट एक्यूसेशन, वाल्वो ग्रुप इंडिया), हर्ष राज जैन (इंडिया हेड ईबीआईएक्स) सहित सात एचआर प्रतिनिधियों ने कहा कि ज्ञान आपके लिए बहुत ही जरूरी है, लेकिन रटने वाली आदत अच्छी नहीं होती।

ऐसी लैंग्वेज की जरूरत, जो सभी जगह एक्सेप्टेबल हो

'एचआर प्रतिनिधियों से छात्र ने पूछा कि वर्तमान में अंग्रेजी को बहुत महत्व दिया जाता है, लेकिन किसी छात्र को अंग्रेजी की समझ कम हो तो ऐसे में क्या वह कार्पोरेट सेक्टर में सक्सेस हो सकता है। इसके जवाब में पैनलिस्ट ने कहा कि कार्पोरेट सेक्टर में ऐसी लैंग्वेज की जरूरत होती है जो सभी जगह एक्सेप्टेबल हो। उन्होंने बताया कि इंग्लिश स्पीकिंग के साथ-साथ हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में यदि आप पारंगत है तो कार्पोरेट सेक्टर में आपको सफलता मिलना निश्चित है। इस अवसर पर संस्थान के प्रो. चांसलर डा. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रो. योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डा. ओमवीर सिंह, डीन अकेडमिक डा. रंजीत सिंह तोमर, अर्पित सिंह चौहान मौजूद रहे।

Sports Achievements

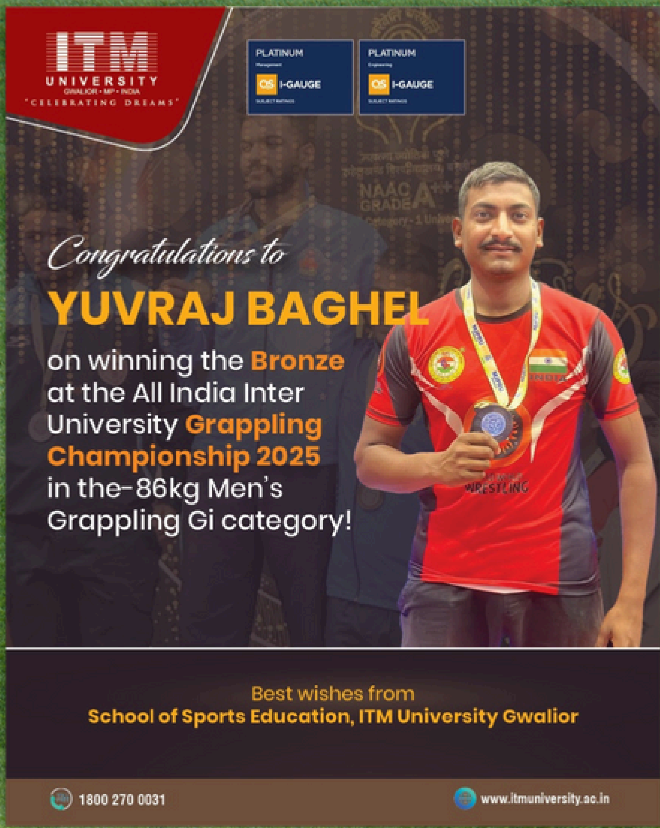

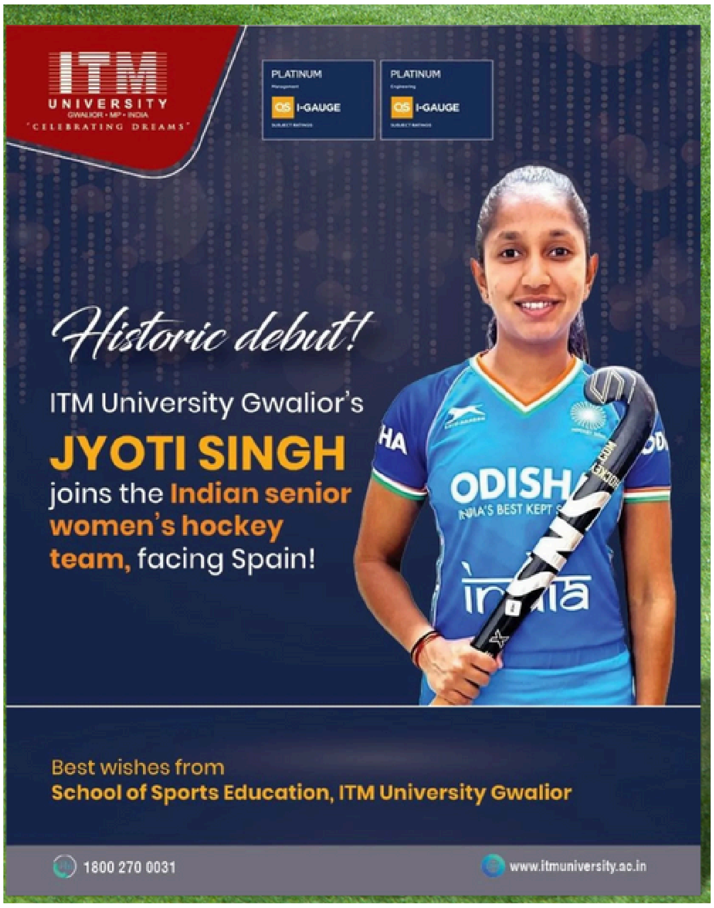

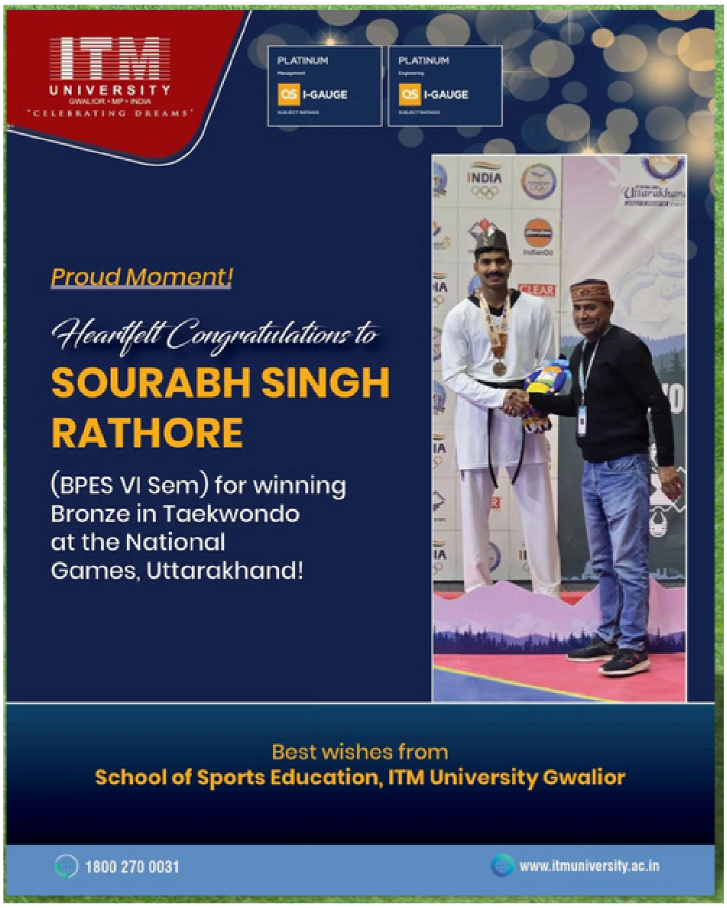

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में माइक्रो और नैनोप्लास्टिक्स के प्रभाव पर विशेष व्याख्यान हुआ।

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में स्कूल ऑफ साइंसेस एवं फार्मेसी विभाग द्वारा "जीवित प्रणालियों पर माइक्रो और नैनोप्लास्टिक्स के प्रभाव" विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में वैज्ञानिक डॉ. आर. विजयाराघवन (डीआरडीई ग्वालियर) मुख्य वक्ता और अतिथि के रूप में शामिल हुए।

इस अवसर पर स्कूल ऑफ साइंसेस विभाग के डीन प्रोफेसर वायसी गोस्वामी, डीन फार्मेसी डॉ. ऋत्वा कोठारी, डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर सोनिया जौहरी, डॉ. शिवओम सिंह, डॉ. रंजना गोस्वामी, डीएसडब्ल्यू तृप्ति पाठक, डॉ. रीता शर्मा, डॉ. रेखा वशिष्ठ, सुखबीर सिंह सहित विभिन्न प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। वहीं, मंच संचालन का कार्य असिस्टेंट प्रोफेसर विजेता भट्टाचार्य द्वारा किया गया।

माइक्रोप्लास्टिक्स और नैनोप्लास्टिक्स: पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा

व्याख्यान के दौरान मुख्य वक्ता वैज्ञानिक डॉ. आर. विजयाराघवन ने बताया कि माइक्रोप्लास्टिक्स (5 मिमी से छोटे कण) और नैनोप्लास्टिक्स (100 एनएम से छोटे कण) प्लास्टिक के विघटन, औद्योगिक प्रक्रियाओं, सौंदर्य प्रसाधनों और वस्त्रों जैसे विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न होते हैं। उन्होंने बताया कि ये सूक्ष्म कण स्थलीय, जलीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में प्रवेश कर जल, वायु और जीवों के माध्यम से व्यापक रूप से फैलते हैं।

डॉ. विजयाराघवन ने बताया कि ये प्रदूषक (नैनो पार्टिकल्स) खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर जलीय जीवन को प्रभावित करते हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इन सूक्ष्म प्लास्टिक कणों का नियंत्रण और प्रबंधन आवश्यक है, क्योंकि ये पर्यावरण और जैव विविधता के लिए दीर्घकालिक संकट खड़ा कर सकते हैं।

छात्रों ने प्रश्नोत्तर सत्र में बढ़-चढ़कर भाग लिया

कार्यक्रम के अंत में छात्र-छात्राओं ने मुख्य वक्ता से प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया। उन्होंने इस विषय से जुड़े वैज्ञानिक तथ्यों को समझने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त किया।

अंत में, डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर सोनिया जौहरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी अतिथियों, संकाय सदस्यों एवं छात्रों को इस व्याख्यान में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया।

जीवन को प्लास्टिक प्रदूषण से सावधान करना व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य: प्रो. वायसी गोस्वामी

इस विशेष व्याख्यान में स्कूल ऑफ साइंसेस विभाग के डीन प्रो. वायसी गोस्वामी ने बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य माइक्रो और नैनोप्लास्टिक्स के खतरों को समझना एवं जागरूकता बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि इन सूक्ष्म प्लास्टिक कणों के प्रभावों को समझकर ही हम पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं।

प्रो. गोस्वामी ने छात्रों को प्लास्टिक के संयमित उपयोग, उसके उचित प्रबंधन और पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) की आवश्यकता के बारे में जागरूक किया। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण से बचाव के लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा और सतत् पर्यावरणीय समाधान अपनाने होंगे।

माइक्रोप्लास्टिक्स पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता के लिए एक मौन खतरा

डॉ. विजयाराघवन ने आगे कहा कि माइक्रो और नैनोप्लास्टिक हमारे पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता के लिए एक "मौन खतरा" बन चुके हैं। पौधे, जानवर, जलीय जीव, मछलियाँ और सूक्ष्म जीव भी इससे प्रभावित हो रहे हैं, जो अंततः मानव स्वास्थ्य और अस्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।

उन्होंने बताया कि हालांकि इस समस्या का समाधान संभव है, बशर्ते कि अनुसंधान, नीतिगत बदलाव और जन-जागरूकता के माध्यम से इस बढ़ते खतरे को नियंत्रित किया जाए। सामूहिक प्रयासों के माध्यम से ही हम प्लास्टिक प्रदूषण को नियंत्रित कर सकते हैं और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

आईटीएम यूनिवर्सिटी में 'एआई के साथ नवाचार पत्रकारिता' विषय पर हुआ एक्सपर्ट्स टॉक का आयोजन

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा 'एआई के साथ नवाचार पत्रकारिता' विषय पर एक्सपर्ट्स टॉक का आयोजन किया गया। संस्थान के टीवी स्टूडियो में आयोजित टॉक में विशेषज्ञ एवं एक्टसपर्ट्स के रूप में पराक्रम सिंह शेखावत (वरिष्ठ पत्रकार एवं दूरदर्शन के प्रमुख एंकर), प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी (आईटीएम यूनिवर्सिटी), प्रो. गोविंद पांडेय (विभागाध्यक्ष पत्रकारिता, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ) शामिल हुए। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनीष जैसल, असिस्टेंट प्रोफेसर सोनाली सिंह सहित प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। वहीं कार्यक्रम का संचालन छात्रा अनुष्का तिवारी ने किया, धन्यवाद ज्ञापन छात्रा निशा द्वारा दिया गया।

पत्रकारिता में एआई पर अधिक निर्भरता से सटीकता और नैतिकता पर प्रश्न खड़े हो सकते हैं: पराक्रम सिंह शेखावत आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित एसक्पर्ट्स टॉक में शामिल हुए एक्सपर्ट पराक्रम सिंह शेखावत (वरिष्ठ पत्रकार एवं दूरदर्शन के प्रमुख एंकर) ने 'भारतीय एआई मॉडल के भविष्य पर विचार रखते हुए कहा कि नवाचार की कुंजी 'सोचने' में निहित है। उन्होंने कहा कि एआई पत्रकारिता को सुगम बना सकता है, लेकिन यह कभी भी पत्रकारों का पूर्णतः स्थान नहीं ले सकता। उन्होंने एआई एंकर सना का उदाहरण देते हुए बताया कि एआई का उपयोग केवल कंटेंट निर्माण में प्रभावी हो सकता है, लेकिन फील्ड रिपोर्टिंग में यह अभी उतना प्रभावी नहीं है। उन्होंने आगाह किया कि पत्रकारिता में एआई पर अधिक निर्भरता से सटीकता और नैतिकता पर प्रश्न खड़े हो सकते हैं। साथ ही, एआई फेक न्यूज़ और भ्रामक सूचनाओं के प्रसार में एक खतरा बन सकता है। इसलिए, इसे केवल पत्रकारिता के सहायक उपकरण के रूप में ही प्रयोग किया जाना चाहिए। सूचना की तीव्र गति से विचारों में ठहराव कम हो रहा है: प्रोफेसर अरुण कमार त्रिपाठी आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित एसक्पर्ट्स टॉक में शामिल हुए एक्सपर्ट प्रो. अरुण कुमार त्रिपाठी (आईटीएम यूनिवर्सिटी) ने 'मैक्लुहान के वैश्विक गाँव (ग्लोबल विलेज) के सिद्धांत' की वर्तमानसमय में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मानव हमेशा नवाचार से आगे बढ़ता रहा है, लेकिन सवाल यह है कि क्या लोकतंत्र एआई के साथ संतुलन बना पाएगा। उन्होंने 'सूचना साम्राज्यवाद' और 'गति की भ्रांति' की चर्चा करते हुए कहा कि सूचना की तीव्र गति से विचारों में ठहराव कम हो रहा है।

बुद्धिमत्ता ही हमारी असली राष्ट्रीयता होनी चाहिए: प्रोफेसर गोविंद पांडेय

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित एसक्पर्ट्स टॉक में शामिल हुए एक्सपर्ट प्रो. गोविंद पांडेय (विभागाध्यक्ष पत्रकारिता, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ) ने 'सत्य और इसकी महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि सत्य समय-विशिष्ट होता है। आज जो सत्य है, वह कल बदल सकता है, क्योंकि परिवर्तन एक सतत प्रक्रिया है। उन्होंने एआई से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों की चर्चा की और कॉपरनिकस के' सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिक्रमा करने के सिद्धांत' का उल्लेख करते हुए बताया कि ऐतिहासिक रूप से सत्य को स्वीकारने में कठिनाई हुई है, क्योंकि धर्म और समाज की रूढ़ियां इसे प्रभावित करती हैं। उन्होंने फिल्म 'अछूत कन्या का उदाहरण देते हुए वर्तमान सिनेमा में एआई के उपयोग पर प्रकाश डाला

आईटीएम में 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित

आईटीएम ग्वालियर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा इंस्टीट्यूट्स इनोवेशन काउंसिल एवं सेंट्रल लाइब्रेरी आईटीएम के सहयोग से राष्ट्रीय युवा सप्ताह के अंतर्गत 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। संस्थान के सिथौली स्थित परिसर में आयोजित विशेष व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में गजेंद्र सिंह तोमर (सदस्य, मुख्यमंत्री युवा सलाहकार परिषद मप्र), विशिष्ट डॉ. हरिशंकर सिंह कंसाना (समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर), विशेष वक्ता डॉ. दौलत सिंह चौहान (प्रो-चांसलर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर) शामिल हुए। इस अवसर पर आईटीएम के डीन अकैडमिक्स डॉ एसएस चौहान, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. मनोज मिश्रा, वहीं आयोजक समिति में प्रो. नरेंद्र वर्मा (कार्यक्रम समन्वयक), प्रो. अर्चना तोमर (कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो महिला इकाई), प्रो. शाहिद अमीन (संयोजक, आईआईसी आईटीएम ग्वालियर), प्रो. सीपी भार्गव (वरिष्ठ रासेयो सदस्य), नेहा शर्मा (रासेयो सदस्य), प्रो. आर के राजोरिया (सहसंयोजक आईआईसी), डॉ. विकास द्ववेदी (सेंट्रल लाइब्रेरी आईटीएम प्रमुख), सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। युवा सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहकर अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने का कार्य करें: गजेंद्र सिंह तोमर आईटीएम ग्वालियर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा इंस्टीट्यूट्स इनोवेशन काउंसिल एवं सेंट्रल लाइब्रेरी आईटीएम के सहयोग से 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर विशेष व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में गजेंद्र सिंह तोमर (सदस्य, मुख्यमंत्री युवा सलाहकार परिषद मप्र) ने कहा कि युवा देश की रीढ़ हैं।
उनकी ऊर्जा, रचनात्मकता और दृढ़ता देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकती है।
उन्होंने युवाओं को सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहने और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने का संदेश दिया।

रासेयो समाज के लिए योगदान देने का माध्यम है: डॉ. हरिशंकर सिंह कंसाना

आईटीएम ग्वालियर की रासेया इकाई द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में विशिष्ट डॉ. हरिशंकर सिंह कंसाना (समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना) ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज के लिए योगदान देने का एक माध्यम है। उन्होंने विद्यार्थियों को समाज की समस्याओं के समाधान में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज की बेहतरी में योगदान देना भी है: प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान आईटीएम ग्वालियर की रासेया इकाई द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान ने कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल सरकार या किसी संगठन की जिम्मेदारी नहीं है, यह प्रत्येक नागरिक, विशेष रूप से युवाओं का कर्तव्य है।

संस्थान के सिथौली स्थित परिसर में आयोजित विशेष व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में गजेंद्र सिंह तोमर (सदस्य, मुख्यमंत्री युवा सलाहकार परिषद मप्र), विशिष्ट डॉ. हरिशंकर सिंह कंसाना (समन्वयक, राष्ट्रीय सेवा योजना जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर), विशेष वक्ता डॉ. दौलत सिंह चौहान (प्रो-चांसलर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर) शामिल हुए। इस अवसर पर आईटीएम के डीन अकैडमिक्स डॉ एसएस चौहान, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. मनोज मिश्रा, वहीं आयोजक समिति में प्रो. नरेंद्र वर्मा (कार्यक्रम समन्वयक), प्रो. अर्चना तोमर (कार्यक्रम अधिकारी, रासेयो महिला इकाई), प्रो. शाहिद अमीन (संयोजक, आईआईसी आईटीएम ग्वालियर), प्रो. सीपी भार्गव (वरिष्ठ रासेयो सदस्य), नेहा शर्मा (रासेयो सदस्य), प्रो. आर के राजोरिया (सहसंयोजक आईआईसी), डॉ. विकास द्ववेदी (सेंट्रल लाइब्रेरी आईटीएम प्रमुख), सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

युवा सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहकर अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने का कार्य करें: गजेंद्र सिंह तोमर आईटीएम ग्वालियर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा इंस्टीट्यूट्स इनोवेशन काउंसिल एवं सेंट्रल लाइब्रेरी आईटीएम के सहयोग से 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका' विषय पर विशेष व्याख्यान में मुख्य अतिथि के रूप में गजेंद्र सिंह तोमर (सदस्य, मुख्यमंत्री युवा सलाहकार परिषद मप्र) ने कहा कि युवा देश की रीढ़ हैं।
उनकी ऊर्जा, रचनात्मकता और दृढ़ता देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकती है।
उन्होंने युवाओं को सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहने और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने का संदेश दिया।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज की बेहतरी में योगदान देना भी है: प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान

आईटीएम ग्वालियर की रासेया इकाई द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान में आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान ने कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल सरकार या किसी संगठन की जिम्मेदारी नहीं है, यह प्रत्येक नागरिक, विशेष रूप से युवाओं का कर्तव्य है। युवा यदि अपनी शिक्षा और कौशल का उपयोग समाज की प्रगति में करेंगे, तो देश को विश्व गुरु बनने से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि आईटीएम की प्रथम प्राथमिकता है कि प्रत्येक विद्यार्थी को समाजसेवा के साथ शिक्षा एवं शिक्षा के साथ समाजसेवा के भाव से आगे बढ़े। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि समाज की - बेहतरी में योगदान देना भी है।

आईटीएम यूनिवर्सिटी में गांधी ग्रामोफोन और रेडियो विषय पर कार्यशाला आयोजित

आप कल्पनाशीलता बनाए रखें यही कला आपको जीवित रखेगी: मदनमोहन दानिश

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा विश्व रेडियो दिवस के उपलक्ष्य में 'गांधी, ग्रामोफोन और रेडियो' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात शायर और आकाशवाणी के पूर्व प्रसारक मदनमोहन दानिश, ब्यूरोक्रेट अखिलेश झा शामिल हुए। वहीं अध्यक्षता आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने की। इस अवसर पर आईटीएम पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अध्यक्ष और कार्यशाला संयोजक डॉ. मनीष जैसल के अलावा विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। वहीं कार्यशाला का संचालन छात्र मयंक त्रिपाठी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन छात्रा वंशिका चौहान ने दिया।

आप कल्पनाशीलता बनाए रखें यही कला आपको जीवित रखेगी: मदनमोहन दानिश: आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा विश्व रेडियो दिवस के उपलक्ष्य में 'गांधी, ग्रामोफेन और रेडियो' विषय पर आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि प्रख्यात शायर और आकाशवाणी के पूर्व प्रसारक मदनमोहन दानिश ने कहा कि जो चीज हमारे लिए उपयोगी हो, महत्वपूर्ण हो तो वह हमेशा प्रासंगिक रहेगी।

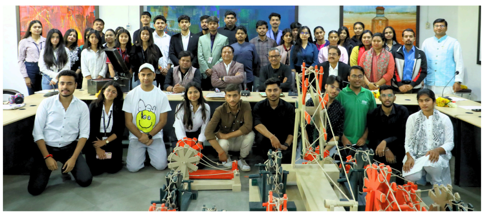

गांधी जी ने ग्रामोफोन को एक डिजिटलचर्खा के तौर पर उपयोग किया था: ब्यूरोक्रेट अखिलेश झा: आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में द्वितीय मुख्य अतिथि ब्यूरोक्रेट अखिलेश झा ने गांधी के 1931 की ग्रामोफेन की पहली रिकॉर्डिंग सुनाकर संवाद शुरू किया। उन्होंने कहा कि गांधी बहुत बड़े वैज्ञानिक थे और उन्होंने ग्रामोफेन को को एक डिजिटलचर्खा के तौर पर उपयोग किया था।

वक्ताओं से सीखना चाहिए कि हम अपने जुनून को किस तरह पेशा बनाएं: वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय: पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला की की अध्यक्षता कर रहे आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने आईटीएम पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के रचनात्मक कार्यक्रम छात्र-छात्राओं में मूल्य प्रणाली को विकसित करने में सहायक होते हैं। कार्यशाला में आईटीएम जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनीष जैसल ने भी रेडियो की प्रासंगिकता पर रौशनी डालते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

छात्र-छात्राओं ने किया वक्ताओं से सवाल-जवाब

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला के दौरान छात्र-छात्राओं ने अतिथियों से 'गांधी, ग्रामोफोन और रेडियो' के क्षेत्र में वर्तमान में किस तरह अपना कॅरियर बना सकते हैं विषय पर सवाल-जवाब किए। इस पर मुख्य अतिथि प्रख्यात शायर और आकाशवाणी के पूर्व प्रसारक मदनमोहन दानिश, ब्यूरोक्रेट अखिलेश झा ने जवाब देकर छात्र-छात्राओं की जिज्ञासाओं को शांत किया।

आईटीएम यूनिवर्सिटी में युवा सप्ताह का आयोजन किया गया

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में 'युवा सप्ताह' का आयोजन किया गया। जहां मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी विवेकानंद जी के अनुयायी डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा, डीन एकेडमिक डॉ. रंजीत सिंह तोमर, रासेयो के कॉर्डिनेटर संयोजक डॉ. आनंद कुमार पांडेय, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. तृप्ति पाठक और डीन एसओईटी प्रो. मुकेश पांडे बतौर अतिथि मंच पर उपस्थित रहीं। इस अवसर पर आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर के प्रो-चांसलर डॉ. दौलत सिंह चौहान, वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। वहीं अतिथियों का स्वागत छात्र अध्यक्ष यश और फौजिया द्वारा किया गया।

ऐसा बल-उर्जा जो किसी को निःस्वार्थ निराभावी, अभिमान रहित कार्य करने को प्रेरित करे, वही आध्यात्म है: डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'युवा सप्ताह' कार्यक्रम के तहत विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। जहां मुख्य अतिथि और स्वामी विवेकानंद जी के अनुयायी डॉ. सुरेश चंद्र शर्मा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी चाहते थे कि युवा अधिक से अधिक संख्या में सामाजिक गतिविधियों में शामिल हों, जिससे न केवल समाज बेहतर रहेगा, बल्कि इससे व्यक्तिगत विकास भी होगा। उन्होंने सामाजिक सेवा के साथ आध्यात्मिकता को भी जोड़ा और मनुष्य में मौजूद ईश्वर की सेवा करने की बात कही। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी का मानना था कि एक युवा का जीवन सफल होने के साथ-साथ सार्थक भी होना चाहिए, जिससे उसके मस्तिष्क, हृदय और आत्मा का संपोषण भी होता रहे। सार्थक जीवन के विषय में चार विंदुओं में समझाते हुए शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संधान भार को भारत बनाने, पुनर्निर्माण में शिक्षा के महत्व पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि आप जनता की मदद करें और जीवन में संकटों से निपटने में मददगार बनें। चरित्र निर्माण करें, परोपकार का भाव जगाएं और सिंह भी भांति साहस प्रदान करें।

उन्होंने कहा कि ऐसा बल-उर्जा जो किसी को निःस्वार्थ निराभावी, अभिमान रहित कार्य करने को प्रेरित करे, वही आध्यात्म है।

उन्होंने गीता के कर्म-योग अध्याय का श्लोक

'श्रेयान्स्वधर्मो विगुण पर धर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मो भयावहः।

उन्होंने कहा कि अपने कर्तव्य का पालन करना, दूसरों के कर्मों को करने से बेहतर हे। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मरना दूसरों को जोखिम भरे मार्ग पर चलने से बेहतर है।

उन्होंने गीता के एक अन्य श्लोक का अर्थ बताते हुए कहा कि जब तक मनुष्य में इंद्रिय विषयों से वैराग्य तथा ईश्वर के प्रति आशक्ति विकसित न हो जाए तब तक उसे कर्म करते रहना चाहिए। उन्होंने छात्र-छात्राओं से कहा कि आप पूर्ण - मनोयोग से अपनी युवा शक्ति का सृजनात्मक उपयोग करें तभी युवा दिवस सफल हो पाएगा।

आईटीएम यूनिवर्सिटी : नवाचार अवसर और कौशल विषय पर विशेष व्याख्यान

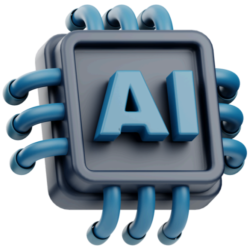

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए अपार संभावनाएं : विवेक खंडेलवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए अपार संभावनाएं है। इसके माध्यम से न सिर्फ हम अधिक जानकारी अर्जित कर सकते हैं, बल्कि आसानी से समस्याओं का समाधान खोज सकते है। यह बात आईटीएम यूनिवर्सिटी में कंप्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशंस विभाग द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भविष्य के लिए नवाचार अवसर और कौशल विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में विषय विशेषज्ञ विवेक खंडेलवाल (एआई फ्रेमवर्क इंजीनियर, एडवांस माइक्रो डिवाइस) ने कही। उन्होंने उद्योगों में एआई द्वारा निभाई जा रही परिवर्तनकारी भूमिका के साथ इस गतिशील क्षेत्र में करियर बनाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान पर अपनी विशेषज्ञता साझा की। संस्थान के तुरारी कैंपस स्थित एलडीवी ब्लॉक के उस्ताद अल्लाउद्दीन खान ऑडिटोरियम में आयोजित व्याख्यान में आईटीएम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय, कंप्यूटर साइंस एंड एप्लीकेशंस की विभागाध्यक्ष डॉ. गीतांजलि सुरंगे, कार्यक्रम समन्वयक एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वाणी अग्रवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मनाली शुक्ला सहित विभिन्न विभागों के प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

एआई हमारे पढ़ाने, सीखने, काम करने के तरीके को बदल रही

आईटीएम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने कहा, एआई तेजी से बढ़ती हुई तकनीक है, जो सक्रिय रूप से हमारे पढ़ाने, सीखने, काम करने और जीने के तरीके को बदल रही हैं। कई लोग अनजाने में रोजाना एआई के साथ बातचीत करते हैं। हैं, मोबाइल फोन और कंप्यूटर एप्लिकेशन से लेकर निगरानी प्रणाली और मीडिया स्ट्रीमिंग सेवाओं तक में में इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सफलता उसके कदमों को चूमती है जो समय के साथ-साथ चलता है। छात्र-छात्राओं को एआई रिलेटेड प्रोजेक्ट पर काम करना चाहिए, जिससे भविष्य में सफलता प्राप्त हो।

सक्सेस के लिए प्रोग्रामिक सॉल्विंग क्रिटिकल थिंकिंग और गुड कम्युनिकेशन स्किल डेवलप करना चाहिए

विशेषज्ञ विवेक खंडेलवाल (एआई फ्रेमवर्क इंजीनियर, एडवांस माइक्रो डिवाइस) और छात्र-छात्राओं के बीच वार्ता का आयोजन भी किया गया। छात्र हितांशु सिंघल, विदुषी सिंह तोमर, आदित्य यादव, काजल और अंशिका सहित अन्य छात्र-छात्राओं ने सवाल पूछते हुए कहा कि एआई के क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए क्या आवश्यकता है। क्या बिना जॉब को रिप्लेश किए इंसानों की कैपेबिलटीज को एआई पूरा सकता है। इस पर विशेषज्ञ विवेक

खंडेलवाल ने कहा कि एआई में कॅरियर बनाने के लिए पायथन प्रोग्रामिंग सीखना चाहिए।

मैथमेटिक्स में एलजेब्रा कैल्कुलेशन और इस्टेटिक्स आने के साथ ही मशीन लर्निंग कॉसेप्ट्स आना चाहिए। सक्सेस के लिए प्रोग्रामिक सॉल्विंग क्रिटिकल थिंकिंग और गुड कम्युनिकेशन स्किल डेवलप करने की आवश्यकता है। एआई ह्यूमन कैपेबिल्टीजको बढ़ा सकता है, बिना रिप्लेश किए वो किसी भी काम को बहुत बार रिपीट कर सकता है।

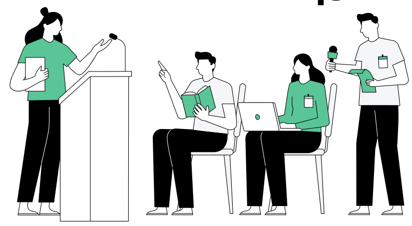

आईटीएम यूनिवर्सिटी में मेडिकोन-2.0 द्वितीय नेशनल कॉन्फ्रेंस

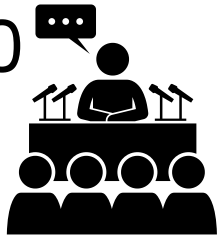

तनाव मुक्त रहकर पढ़ाई पर ध्यान दें छात्र- छात्राएं

आईटीएम यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ मेडिकल एंड पैरामेडिकल साइंसेस द्वारा इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथैरेपिस्ट्स, वूमेन सेल मप्र के सहयोग से तीन दिवसीय मेडिकोन-2.0 द्वितीय नेशनल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इसकी थीम रेमी-डी (रीहेबिलिटेशन मोटिवः इनोवेशन फ्रॉम डायग्नोसिस टू रिकवरी) थी। मुख्य अतिथि आईपीएस जेंडेन लिंगजर्पा ने कहा कि पढ़ाई के साथ प्रतियोगिताओं और खेल गतिविधियों में हिस्सा लेना चाहिए। परीक्षाएं चल रही है, ऐसे में छात्र-छात्राएं तनावग्रस्त हो जाते हैं। तनाव से मुक्त रहकर अपनी तैयारी पर ध्यान देना चाहिए, अभी से रिजल्ट की चिंता करने के कारण आप जो भी तैयारी करते हैं वह भी परीक्षा के दौरान भूल जाते हैं, इसलिए तनाव नहीं लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि फिजियोथेरेपी वर्तमान की जरूरत है, आप इसमें अपना कॅरियर बना सकते हैं। आईटीएम यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर योगेश उपाध्याय ने कहा कि अगर सही डायग्नोसिस करते है तो हम, हमारा परिवार और समाज स्वस्थ रहता है। वर्तमान समय में काम के बोझ के तले आप इतना दबे हुए है कि स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना ही छोड़ दिया है। स्वस्थ रहने के लिए सही डाग्यनोसिस जरूरी है।

रजिस्ट्रार डॉ. ओमवीर सिंह ने कहा कि वर्तमान में वही व्यक्ति सक्सेस है, जो समय के साथ बदल रहीं तकनीकों में पारंगत हो। कॉन्फ्रेंस कन्वीनर एचओडी डॉ. अंशुल ने • बताया कि कॉन्फ्रेंस का उद्देश्य • फिजियोथेरेपिस्टों के पेशे के बारे में • जागरूकता पैदा करना है। साथ ही फिजियोथेरेपिस्ट होने के नाते रोजमर्रा के संघर्ष के चलते होने वाली समस्याओं से निदान दिलाना है।

छात्र-छात्राओं ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

कॉन्फ्रेंस के समापन सत्र के दौरान एसओएमपीएस के छात्र-छात्राओं द्वारा गणेश वंदना के साथ महाभारत गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया। वहीं फैशन-शो विद पैथोजाजिकल, एपिलेप्सी पर माइन-शो, डर्मेटोम्स और मायोटोम्स नृत्य की प्रस्तुतियां दी गईं। अंत में प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सही डायग्नोसिस और फिजियोथेरेपी से क्रॉनिक कमर दर्द को सही किया जा सकता है

प्रथम सत्र में विषय विशेषज्ञ डॉ. संजीव झा प्रेसिडेंट, इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथैरेपिस्ट) ने कहा कि अधिक या कम मूवमेंट के कारण ज्वाइंट में दर्द और जकड़न उत्पनन हो सकती है। गलत पोस्चर, मांसपेशियों की कमजोरी या चोट के कारण, गर्भावस्था, हार्मोनल बदलाव या अधिक भार उठाने के कारण, अधिक समय तक बैठने या गलत गतिविधियों के कारण ज्वाइंट दर्द की समस्या हो जाती है। डॉ. रुचि वाष्र्णेय नेशनल हेड इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथैरेपिस्ट ने कहा कि फिजियोथेरेपिस्ट न केवल रोगियों की रिकवरी में बल्कि वैश्विक स्वास्थ्य के सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रोकथाम, पुनर्वास और समग्र स्वास्थ्य संवर्धन में फिजियोथेरेपी की महत्ता लगातार बढ़ रही है। डॉ. राहुल शर्मा हेड न्यूरोलॉजिकल डाग्नोस्टिक टेक्नीक्स फॉर अर्ली रिकवरी विषय पर कहा कि आधुनिक न्यूरोलॉजिकल डायग्नोस्टिक तकनीकें शीघ्र निदान और रोगियों की तेजी से रिकवरी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। द्वितीय सत्र में प्रोफेसर डॉ. अली इरानी एचओडी नानावती मैक्स हॉस्पिटल मुंबई, एवं चेयर पर्सन इंटरनेशन अफेर आईएपी ने फिजियोथेरीपी नीड ऑफ सोसाइटी विषय पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ. हर्ष एम. राजदीप इंचार्ज फिजियोथैरेपी, गवर्मेंट मेडिकल कॉलेज कोटा राजस्थान ने लेटेस्ट स्किल एडवांमेंट्स टू एक्सल इन हेल्थकेयर सिस्टम विषय पर व्याख्यान दिया। ध्रुव तनेजा प्रिंसिपल, एसकेसीपी, आरयूएचएस, जयपुर राजस्थान ने एसीएल फेसिनेशनंस एंड रीसेंट एडवांसेस विषय पर बताया कि एसीएल इंजरी के निदान, उपचार और पुनर्वास में बड़ी प्रगति हुई है।

आईटीएम में 'आर्द्रभूमियों का सतत उपयोग और जैव विविधता' विषय पर कार्यशाला आयोजित

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में स्कूल ऑफसाइंसेस के पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा विश्व आर्द्रभूमि दिवस के उपलक्ष्य में आर्द्रभूमियों का सतत उपयोग और जैव विविधता' विषय पर एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के मधुलिमये सभागार में आयोजित जागरूकता कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर डॉ. आरजे राव (पूर्व कुलपति बर्कतुल्ला यूनिवर्सिटी भोपाल) शामिल हुए। संस्थान के डीन एकेडमिक्स डॉ. रंजीत तोमर, डीन एसओईटी डॉ. मुकेश पांडेय, डीएसडब्ल्यू डॉ. तृप्ति पाठक, स्कूल ऑफ साइसेस के डीन प्रोफेसर वायसी गोस्वामी, डीन स्कूल ऑफ फर्मेसी प्रोफेसर ऋऋच्या कोठारी, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. विद्यालक्ष्मी पुरैलात्पम, डॉ. रंजना गोस्वामी, डॉ. साधना, चतुर्वेदी, डॉ. रीता, डॉ. रेखा वशिष्ठ, डॉ. गौरव सिंह, काजौल, डॉ. रचना सिंह, डॉ. सरकार सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे। आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में स्कूल ऑफ साइंसेस के पर्यावरण विज्ञान विभाग आयोजित 'आर्द्रभूमियों का सतत उपयोग और जैव विविधता' विषय पर जागरूकता कार्यशाला में मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ. आरजे राव (पूर्व कुलपति बर्कतुल्ला यूनिवर्सिटी भोपाल) ने कहा कि आर्द्रभूमियां पृथ्वी पर सबसे महत्वपूर्ण और जैव विविधता से भरपूर पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है। ये जल भूमि और वायु के मिलन स्थल पर स्थित होती हैं और अनेक प्रजातियों के लिए आवास भोजन और प्रजनन स्थल प्रदान करती हैं। आधुनिक समय में इनका अति शोषण और अव्यवस्थित उपयोग इनकी जैव विविधता को खतरे में डाल रहा है। ये आर्द्र भूमियां जैव विविधता संरक्षण, जल संतुलन, जलवायु नियंत्रण, आजीविका का साधन आदि के लिए महत्वपूर्ण है। इसके सतत उपयोग के उपाय ऐसे हो सकते हैं कि हम जागरूकता फैलाएं, संरक्षण नीतियां बनाएं। इसमें स्थानीय सामुदायों की भागीदारी को शामिल करना, पर्यावरण अनुकूलन तकनीकों का उपयोग करना एवं पुनर्स्थापन करना है। मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ. आरजे राव ने प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के माध्यम से हमारे पर्यावरण की रक्षा करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि भारत की विविध जलवायु परिस्थितियों और जंगलों, वर्षा, नदियों और नदी मैट्रिक्स प्रणाली के महत्वपूर्ण महत्व के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि देश के जैव-भौगोलिक क्षेत्रों, इकोटोन और विभिन्न आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी प्रणालियों पर चर्चा की, जिसमें कोरिंगा जैसे मैंग्रोव, नमक झीलें और अन्य महत्वपूर्ण जल निकाय शामिल हैं जो समृद्ध जैव विविधता का समर्थन करते हैं। प्रोफेसर राव ने कहा कि शहरीकरण, प्रदूषण और अस्थिर भूमि उपयोग जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण आर्द्रभूमियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिक तंत्रों के सतत उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए सामुदायिक भागीदारी और नीति संचालित संरक्षण प्रयासों की ओर ध्यान देने की श्यकता है।

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में स्कूल ऑफ साइंसेस के पर्यावरण विज्ञान विभाग आयोजित जागरूकता कार्यशाला के दौरान सवाल-जवाब सेसन का आयोजन किया गया। जहां मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ. आरजे राव ने विभिन्न विभागों के छात्र- छात्राओं के सवालों का जवाब देने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति सक्रिय योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया।

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में 'साइंस, आर्ट एंड रिलिजन' पर विशेष व्याख्यान आयोजित

विज्ञान और कला के बिना धर्म भी अधूरा सा लगता है: डॉ. रंजीत सिंह

आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर में 43वीं मीटिंग्स ऑफ माइंड्स के तहत 'साइंस, आर्ट एंड रिलिजन' विषय पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उस्ताद अल्लाउद्दीन ऑडिटोरियम में आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात पेंटर, मूर्तिकार और लेखक अशोक भौमिक शामिल हुए।

कार्यक्रम में आईटीएम यूनिवर्सिटी की चांसलर श्रीमती रूचि सिंह, डीन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी डॉ. मुकेश पांडे, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. तृप्ति पाठक, डीन एकेडमिक्स डॉ. रंजीत सिंह तोमर, मैनेजमेंट के एचओडी डॉ. प्रशांत सिद्धे, एसोसिएट प्रोफेसर संपूर्णा पांडा सहित विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, डीन, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

विज्ञान, कला और धर्म ने मिलकर आधुनिक भारत को तैयार किया है: अशोक भौमिक

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अशोक भौमिक ने पॉवर प्रेजेंटेशन के माध्यम से यह बताया कि विज्ञान, कला और धर्म एक-दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं। उन्होंने कहा कि इन तीनों तत्वों ने मिलकर आधुनिक भारत को आकार दिया है।

उन्होंने पिछले डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 1848 में राजा रवि वर्मा का जन्म हुआ, जिन्होंने अपनी चित्रकला के माध्यम से भारतीय समाज को नया आयाम प्रदान किया।

19वीं सदी में जब विदेशों में विज्ञान की प्रगति हो रही थी, तब उसका प्रभाव भारत में भी पड़ा। उन्होंने बताया कि पहले चित्रकार मध्यम रोशनी में बंद कमरों में बैठकर चित्र बनाते थे, लेकिन यूरेंट नामक चित्रकार ने अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खुले आसमान के नीचे चित्र बनाना शुरू किया।

उन्होंने विज्ञान और कला के अद्भुत संगम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यूरेंट ने रंगों को पैकेट में ले जाने की तकनीक विकसित की थी, जिससे खुले में चित्र बनाना संभव हुआ। यही तकनीक आगे चलकर टूथपेस्ट बनाने में भी उपयोग की गई।

उन्होंने आगे बताया कि चित्रकला, थिएटर, फोटोग्राफी, प्रिंटिंग प्रेस और फिल्मों के आगमन में विज्ञान, कला और धर्म के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। विज्ञान ने कला को नए आयाम दिए, वहीं धर्म ने कलाकारों को प्रेरित किया कि वे अपनी कृतियों के माध्यम से आध्यात्मिकता को व्यक्त करें।

छात्रों के लिए प्रेरणादायक व्याख्यान

कार्यक्रम के अंत में छात्रों ने प्रमुख वक्ताओं से प्रश्न पूछे और विज्ञान, कला और धर्म के आपसी संबंधों को लेकर अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया। चांसलर श्रीमती रूचि सिंह ने इस व्याख्यान को अत्यंत ज्ञानवर्धक बताया और कहा कि यह चर्चा छात्रों के दृष्टिकोण को विस्तृत करने में सहायक सिद्ध होगी। अंत में, डीन एकेडमिक्स डॉ. रंजीत सिंह तोमर ने सभी अतिथियों, संकाय सदस्यों और छात्रों को धन्यवाद ज्ञापित किया और ऐसे आयोजनों की महत्ता को रेखांकित किया।

विज्ञान और कला के बिना धर्म अधूरा है: डॉ. रंजीत सिंह तोमर

आईटीएम यूनिवर्सिटी के डीन एकेडमिक्स डॉ. रंजीत सिंह तोमर ने व्याख्यान के दौरान कहा कि विज्ञान और कला के बिना धर्म अधूरा लगता है। उन्होंने समझाया कि:

- **विज्ञान प्राकृतिक घटनाओं और उनके नियमों को खोजने का माध्यम है।**
- **कला मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने का जरिया है।**
- **धर्म आध्यात्मिकता और सनातन मान्यताओं का मार्गदर्शन करता है।**

उन्होंने कहा कि विज्ञान ने हमेशा कला को प्रोत्साहित किया है, जबकि धर्म ने कला और विज्ञान को प्रभावित किया है। कलाकारों ने धर्म के विचारों और आस्थाओं को अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया है।

राजा रवि वर्मा का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि उनकी कला में सनातन परंपरा, विज्ञान, अध्यात्म और नवाचार का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान, कला और धर्म की परस्पर निर्भरता ने सभ्यता को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

STUDENT' S CORNER

संघर्षों की राह

-निशा
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग कि प्रथम वर्ष का छात्र

ज़ाहिर करने की हैं बात कई,
पर मन की आश मन में ही रही..
करना चाहती हूं पूरे सारे सपने,
जो हैं मन में अपने..
उड़ान मैं ऊंची भरना चाहती हूं, पर गिरने का डर मन में बैठा हैं।
खुशियों से मेरा मन कुछ ऐंठा हैं।
पर फिर खयाल आया की अगर जान के डर से भगत सिंह घर बैठ जाते, तो हम आजादी कहा से पाते।
अगर जीत हैं तो हार भी होगी, लेकिन लहरों से नौका पार भी होगी।
मुश्किलों के सागर में गोते लगाओ, डूबो, तहरो पर कोशिश मत छोड़ो।
तकलीफों से मुंह मत मोड़ो..
ए राही तू बस राह पर चल, ईश्वर का तुझ पर हांथ हैं..
कोई नही तो तेरा मन तो तेरे साथ हैं।
तो डरने की क्या बात हैं।
इतिहास उठा और देख जीवन किसका आसान रहा हैं।
आंखे भर जायेंगी जब जानेगा की किस – किस ने क्या – क्या सहा हैं।
तू बस अपना कर्म कर, परिणाम की चिंता छोड़।
दुख, त्याग और संघर्ष की ओर मुंह मोड़, आसमान ऊंचा हैं, तो क्या उड़ नही सकता, तो चल.. और अगर चल भी नहीं सकता तो रेंग.. पर रुक मत..

"NIGHTS ALLURE OF LOVE"

-Kashish Chhari
3rd year student of JMC

LOVE is never undemanding but is processed when given effort.
It's an excuse to be near you, and when I'm far away,
I crave a little glimpse of you through the billows of love from
which I wove comfort from your face. And enchanted, I'm your
devoted 'beloved', a devotion deeper than your doe eyes.
Theirs a tragedy written in your eyes.
Wonder what you did to survive and escape. I was never a choice
given to you.
Abandoning the soul for them.
The conflict in me for myself was never-ending and infinite.
The alluring secret of love for me in the dusk.
Falling from the sky, My only desire is to free **"MYSELF"**.

मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं

-सोम शर्मा
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रथम वर्ष का छात्र

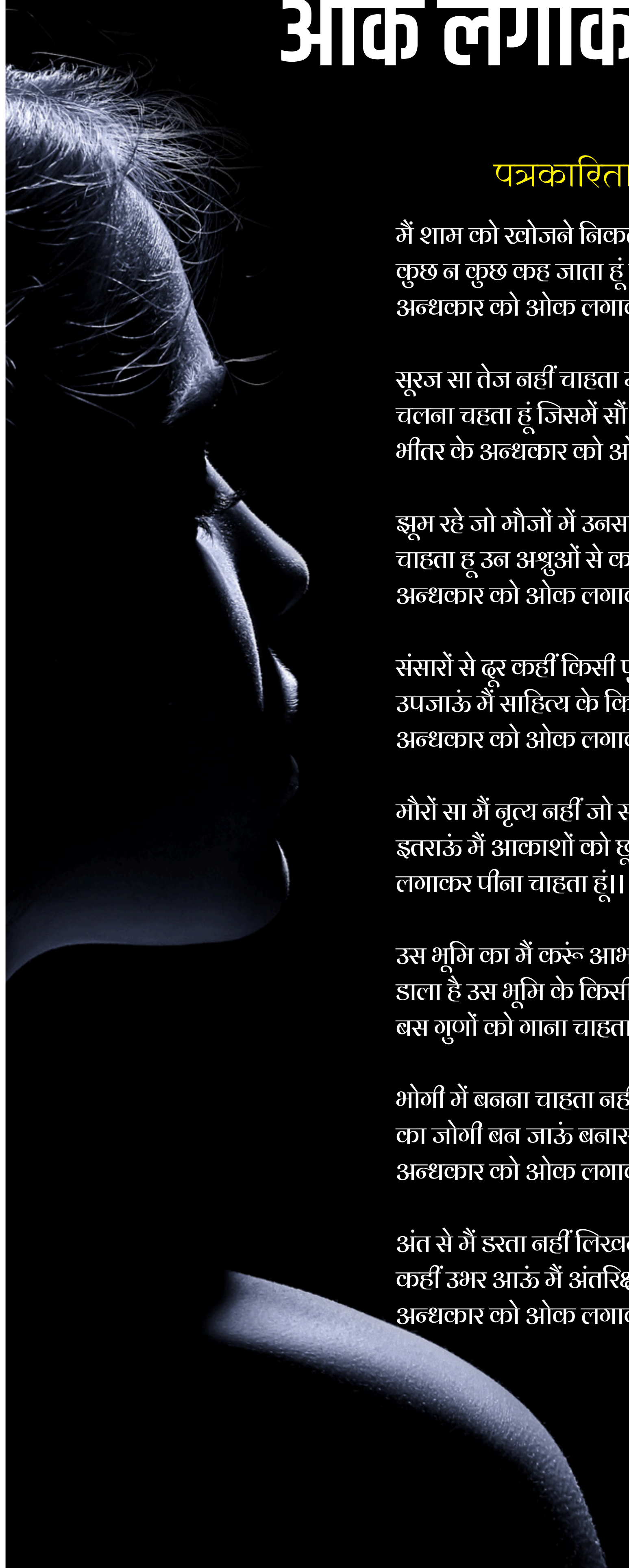

मैं शाम को खोजने निकला हूं और दिन में खुद खो जाता हूं मैं मौन सा होना चाहता हूं फिर भी कुछ न कुछ कह जाता हूं मैं संघर्षों से लड़ पश्चात उनके सिरहाने ही सो जाता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

सूरज सा तेज नहीं चाहता मेहनत से परहेज़ नहीं चहता आंधी को करके इक तरफा मैं हवा सा चलना चहता हूं जिसमें सौंधी सी खुशबू महके वो इक बारिश का मौसम चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

झूम रहे जो मौजों में उनसा ना होना चाहता हूं कष्टों में निकले अपने आंसू का बोझा मैं ढोना चाहता हू उन अश्रुओं से कर सिंचाई मैं खुद के चरित्र को बोहना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

संसारों से दूर कहीं किसी पुस्तक सा मैं हो जाऊं लिखे हुए उन किरदारों को खुद के भीतर मैं उपजाऊं मैं साहित्य के किसी पुस्तकालय में इक छोटा कोना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूँ।।

मोरों सा मैं नृत्य नहीं जो सबके मन को भा जाऊं बाज सा ऊंचा उड़कर भी मैं कभी न खुद पे इतराऊं मैं आकाशों को छू कर भी धरा पे सोना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

उस भूमि का मैं करूं आभार जिसने मुझको पाला है अपनी मिट्टी के मरहम से मेरे हर गाव को भर डाला है उस भूमि के किसी कोने में इक घर बनाना चाहता हूं जहां इक काठ पे बैठ उस भूमि के बस गुणों को गाना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

भोगी में बनना चाहता नहीं और मैं साधु ना कभी बना पाऊं बस मन में यह है आस लगी की कलम का जोगी बन जाऊं बनारस के गाटों पर मैं शहनाई सा बजना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

अंत से मैं डरता नहीं लिखने वाला कभी मरता नहीं जब-जब कोई पढ़े मुझको मैं उनके भीतर कहीं उभर आऊं मैं अंतरिक्ष के अनंतकाल तक शब्दों में जीना चाहता हूं मैं खुद के भीतर के अन्धकार को ओक लगाकर पीना चाहता हूं।।

अंग्रेजो भारत छोड़ो..

-Tapas Maity (MJMC)

"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और हम इसे लेकर रहेंगे।" – बाल गंगाधर तिलक की यह पंक्ति भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विशेष महत्व रखती है, विशेषकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय। अंग्रेज़ी में 'Quit India Movement' कहा जाने वाला यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का निर्णायक मोड़ था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में 9 अगस्त 1942 को इसकी शुरुआत हुई, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन से भारत को पूर्ण स्वतंत्रता दिलाना था। यह जनांदोलन ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ एक संगठित विद्रोह था और भारतीय जनता के धैर्य की अंतिम परीक्षा भी। ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों और द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की अनचाही भागीदारी ने आंदोलन की आवश्यकता को और स्पष्ट कर दिया

पृष्ठभूमि

यह आंदोलन द्वितीय विश्व युद्ध के समय शुरू हुआ, जब ब्रिटिश सरकार ने बिना परामर्श के भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। भारतीय नेताओं ने इसका विरोध किया और स्पष्ट किया कि बिना स्वतंत्रता के वे ब्रिटेन का समर्थन नहीं करेंगे। ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स मिशन भेजकर भारतीयों को संतुष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन वह असफल रहा। गांधीजी ने इसे एक छलावा बताया और 8 अगस्त 1942 को मुंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया।

आंदोलन की घोषणा

गांधीजी ने 8 अगस्त 1942 को मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान (अगस्त क्रांति मैदान) में 'करो या मरो' का आह्वान करते हुए भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा की। गांधीजी ने इसे स्वतंत्रता की दिशा में अंतिम और निर्णायक कदम माना। उन्होंने जनता से अपील की कि वे शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीकों से ब्रिटिश शासन का विरोध करें। इस आंदोलन का मुख्य नारा 'भारत छोड़ो' था, जो स्पष्ट रूप से यह संकेत देता था कि अब अंग्रेजों को हर हाल में भारत छोड़ना होगा।

प्रमुख घटनाएँ

भारत छोड़ो आंदोलन के पहले ही दिन, 9 अगस्त 1942 को, गांधीजी, नेहरू, पटेल सहित कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। इसके बावजूद, आंदोलन पूरे देश में फैल गया। आम जनता, विशेषकर किसान, मजदूर, और छात्र इसमें बड़ी संख्या में शामिल हुए।

1. गिरफ्तारी के बावजूद आंदोलन जारी

नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भी आंदोलन रुकने का नाम नहीं ले रहा था। देश भर में लोग प्रदर्शन, हड़ताल और सविनय अवज्ञा कर रहे थे। सरकारी इमारतों, रेलवे स्टेशनों और अन्य ब्रिटिश संस्थानों को निशाना बनाया गया।

2. युवाओं की भागीदारी

इस आंदोलन में युवाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। छात्रों और युवाओं ने आंदोलन को तेज़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई स्थानों पर स्कूल-कॉलेज बंद कर दिए गए, और युवा सड़कों पर उतर आए।

3. अंडरग्राउंड आंदोलन

कई प्रमुख नेता भूमिगत हो गए और उन्होंने गुप्त रूप से आंदोलन का नेतृत्व किया। जयप्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, और डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे नेता अंडरग्राउंड आंदोलन के प्रमुख चेहरे बने। इन नेताओं ने गुप्त प्रेस और पर्चे के माध्यम से जनता को संगठित किया और आंदोलन को जारी रखा।

ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया

ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन को कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए। हजारों आंदोलनकारियों को गिरफ्तार किया गया, और कई स्थानों पर गोलीबारी में सैकड़ों लोग मारे गए। गांधीजी को पुणे के आगा खां महल में नजरबंद कर दिया गया। कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया और कई प्रमुख नेताओं को जेल में डाल दिया गया। इसके बावजूद, जनता का उत्साह कम नहीं हुआ और आंदोलन जारी रहा।

आलोचना

भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध भी हुआ। मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा जैसे राजनीतिक दलों ने इसका समर्थन नहीं किया। कुछ आलोचक गांधीजी की अहिंसक नीति के बावजूद हिंसा भड़कने के कारण आंदोलन की निंदा करने लगे। आंदोलन के दौरान कई स्थानों पर सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुँचाया गया, जिससे अहिंसा के सिद्धांत पर सवाल उठे।

निष्कर्ष

भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम और निर्णायक चरण था। इसने ब्रिटिश शासन को यह स्पष्ट संकेत दिया कि भारतीय अब किसी भी कीमत पर स्वतंत्रता से कम कुछ नहीं चाहते। आंदोलन ने भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की इच्छा को और गहरा कर दिया। भले ही ब्रिटिश सरकार ने इसे कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए, लेकिन आंदोलन का प्रभाव इतना प्रबल था कि इसके बाद ब्रिटिश शासन के पास भारत को स्वतंत्रता देने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

भारत छोड़ो आंदोलन के बाद ही भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ, और 15 अगस्त 1947 को भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अंतिम निर्णायक कड़ी साबित हुआ, जिसने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Media Literacy: A Vital Skill in the Digital Age

-Tanishka Shrivastava
2nd Year Student of SOJMC

Media literacy refers to the ability to access, analyze, evaluate, create, and communicate information across various media formats. In today's world, where digital platforms and media are everywhere, media literacy has become an essential skill. It empowers individuals to critically engage with the media they consume, make informed decisions about the messages they encounter, and understand the intentions behind them.

The Importance of Media Literacy

The rise of the internet, social media, and other digital platforms has transformed how information is shared and consumed. News, entertainment, and advertisements constantly bombard individuals, often making it difficult to distinguish between fact, opinion, and propaganda. The sheer volume of information available online can be overwhelming, and without proper media literacy, people are more vulnerable to misinformation, manipulation, and biased content.

One of the most significant benefits of media literacy is its ability to help individuals differentiate between credible sources and unreliable content. In an age where misinformation spreads rapidly, especially during critical events like elections or health crises, media literacy is a defense against manipulation. For instance, during the COVID-19 pandemic, false claims and misleading information about treatments, vaccines, and the virus itself circulated widely. A media-literate person could recognize these falsehoods by cross-referencing information with reliable sources, questioning the authenticity of the content, and understanding the motivations behind such news.

Navigating the Digital Landscape

Being media literate enables individuals to think critically about the information they encounter online. It involves questioning the sources of information, identifying biases, and evaluating the credibility of the content. This skill is not only important for consuming information but also for creating it responsibly. As more people engage in creating and sharing media through blogs, social platforms, or other digital outlets, they need to understand the impact of the content they produce and its potential to influence others.

Strengthening Democracy and Society

Media literacy plays a crucial role in strengthening democracy by promoting informed decision-making. An informed populace is essential for democratic participation, as citizens rely on accurate and credible information to make decisions about voting, policy issues, and social matters. By fostering media literacy, societies can encourage critical thinking, reduce the spread of misinformation, and ensure that individuals engage responsibly in digital spaces.

In conclusion, media literacy is more important than ever in our interconnected, fast-paced world. It equips individuals with the tools to navigate the digital landscape, think critically about the information they encounter, and engage responsibly as both consumers and creators. By promoting media literacy, society can build a foundation for informed decision-making and counteract the spread of misinformation.

EVENTS @ITMU

An expert lecture on "Careers in Research: Trends & Future Scope" by the eminent speaker Dr. Nandita Saxena, Scientist F, Defense Research & Development Establishment (DRDE), Gwalior, was organized at Madhu Limaye Seminar Hall, ITM University Gwalior. The event was coordinated by Dr. Sadhna Chaturvedi, Assistant Professor, Department of Biotechnology, School of Sciences, ITM University, and hosted by Ms. Sudhesana, a student of Biotechnology at ITM University.

The session was attended by respected dignitaries, including Dr. Nandita Saxena, Prof. Y.C. Goswami, Dean, School of Sciences, Mrs. Trapti Pathak, Dean, Student Welfare, Dr. Rita Sharma, Department Coordinator, and Dr. Sadhna Chaturvedi, Coordinator of the program. A felicitation ceremony followed, where Prof. (Dr.) Y.C. Goswami honored the guest. Dr. Nandita Saxena, a distinguished scientist in life sciences, has received several national awards, including the Brig (Dr.) KM Rao Award (2021 & 2013), Director's Award for NBC Protection Measures (2021), and National Science Day Oration Award (2020). She completed her post-doctoral research at George Washington University, USA.

In her presentation, Dr. Saxena discussed emerging career opportunities in biotechnology, forensic science, science writing, biogenetics, biomanufacturing, pharmacogenomics, personalized medicine, and theranostics. She advised students to explore ongoing research and consider post-doctoral studies for career growth.

The event concluded with a vote of thanks by Dr. Sadhna Chaturvedi, expressing gratitude to Prof. Yogesh Upadhyay, Hon'ble VC, ITM University, and all contributors.

The session was highly informative and interactive, leaving students inspired about careers in research. The report is presented by Dr. Bidyalakshmi Phurailatpam, Assistant Professor, Department of Environmental Science, School of Sciences, ITM University Gwalior.

The students of B.Sc. and M.Sc. Food Technology visited JB Mangharam Pvt. Ltd., a renowned Britannia biscuit manufacturing company, as part of their industrial exposure program. The visit provided practical insights into large-scale biscuit production, quality control, and advanced food processing techniques.

Accompanied by faculty coordinators Ms. Shraddha Gabel and Ms. Kajol Batta, the students observed various stages of biscuit manufacturing, including dough preparation, sheeting, moulding, baking, cooling, and packaging. Company experts elaborated on key aspects such as ingredient selection, automation in production, quality assurance measures, and shelf-life enhancement techniques.

A special emphasis was placed on food safety protocols, including Good Manufacturing Practices (GMP), Hazard Analysis and Critical Control Points (HACCP), and compliance with FSSAI regulations. The interactive session provided a deeper understanding of the challenges and innovations in the biscuit industry.

As a warm gesture, JB Mangharam Pvt. Ltd. offered freshly made biscuits, allowing students and faculty to experience the quality and taste firsthand. This visit proved to be a valuable learning experience, bridging the gap between theoretical knowledge and industrial applications.

The students expressed their gratitude to JB Mangharam Pvt. Ltd. for the informative session and hospitality, as well as to their faculty coordinators for organizing the visit.

Translating Innovations in Pharmacological Management of Gynaecological Disorders: From Lab to Commercialization.

An academic event on pharmacological innovations in gynaecological disorders focused on bridging research and commercial applications in gynaecological healthcare.

The program began with the arrival of guests and students, followed by Lamp Lighting & Saraswati Pooja. Dr. (Prof.) Tirathankar Choudhury delivered the welcome address, and Dr. (Prof.) Richa Kothari, Dean of the School of Pharmacy, felicitated the esteemed guest.

The keynote speaker, Dr. Vrunda Joshi, former Head of Obstetrics and Gynaecology at Kamla Raja Hospital, GRMC, delivered an insightful talk on advancements in gynaecological pharmacology and their transition from lab research to commercialization. Her session sparked engaging discussions on treatment strategies and industry challenges.

A Q&A session allowed students and faculty to interact with Dr. Joshi on emerging treatments and commercialization strategies. The event concluded with a vote of thanks by Ms. Akanksha Tiwari, acknowledging the contributions of all attendees.

This symposium reinforced ITMU's dedication to academic excellence and industry collaboration in pharmaceutical sciences.

Alumni Reconnect 2025 Strengthens Industry-Academia Bond at ITM University

Gwalior, 15th February 2025 – The Department of Computer Science and Applications (CSA), ITM University, successfully hosted Alumni Reconnect 2025, a dynamic event uniting accomplished alumni, faculty, and students.

The event focused on Live Placement Guidance, Project Mentorship, Resume & LinkedIn Profile Building, Expert Talks on Technological Advancements, and Curriculum Review, providing students with valuable industry insights.

Distinguished Alumni Speakers:

Prominent alumni shared their career journeys and expertise, including:

- Mr. Anshul Chawla (Senior Salesforce Test Analyst, Black Piano Studio)
- Ms. Shivani Khandelwal (Data Scientist)
- Mr. Kaval Rajpal (Software Engineer 2, Hashedin by Deloitte)
- Mr. Neeraj Manjhi (Cyber Security Specialist, DCMN Infotech)
- Mr. Deepak Rathore (Business Consultant, Lance Soft)
- Mr. Sparsh Kaharya (Digital Marketer)
- Mr. Vikrant Tiwari (Ericsson Global India Pvt. Ltd., IIT Madras Alumni)

Event Highlights:

The event commenced with an inspiring address by Hon'ble Vice Chancellor, Dr. Yogesh Upadhyay, emphasizing the pivotal role of alumni in shaping the university's future. Pro Chancellor, Dr. Daulat Singh Chauhan, motivated students to embrace continuous learning.

The gathering was graced by Dr. Mukesh Pandey (Dean, SOET), Dr. Ranjeet Singh (Dean Academics), and convenors Dr. Geetanjali Surange (HOD CSA) and Dr. Pallavi Khatri, who encouraged students to maximize learning opportunities.

A team of dedicated coordinators, Dr. Anand Pandey, Dr. Nidhi Dandotiya, Dr. Keerti Shrivastava, and Ms. Harshita Chaurasiya, ensured the event's success.

The event concluded with a Vote of Thanks by Dr. Geetanjali Surange, reinforcing ITM University's commitment to fostering strong alumni relations.

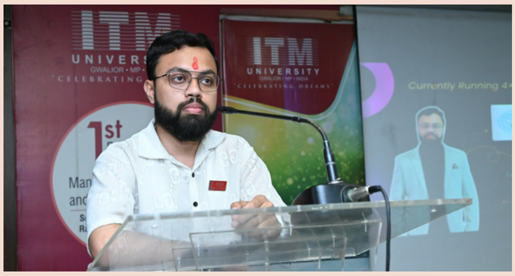

The Department of Physiotherapy and MLT, School of Medical & Paramedical Sciences, organized the gamified activity Build-A-Brace in an innovative manner through role plays. During the event, the team announced the functioning of the newly inaugurated Smart Classroom, inaugurated by the Hon'ble Vice Chancellor and the Respected Registrar of ITMU Gwalior.

An industrial visit to VRS Foods Pvt. Limited, a leading dairy product processing and manufacturing company, was organized by Dr. Tiyasha Sarkar (Assistant Professor, Department of Biotechnology and Microbiology, SOS) and Dr. Rita Sharma (Co-ordinator, Assistant Professor, Department of Biotechnology and Microbiology, SOS) under the leadership of Prof. Y.C. Goswami (Dean, SOS) as part of our curriculum. The visit was conducted for B.Sc Biotechnology/Microbiology/Food Technology II semester and M.Sc. Biotechnology II semester students.

During the visit, we were taken through the entire production process of VRS Foods. The process starts with the careful reception of raw milk, sourced from certified suppliers. The milk undergoes rigorous quality checks before being stored in a silo for its further usage in production. The manufacturing plant operates with modern machinery, including automated separation, sterilization, and packaging systems. Special emphasis is placed on hygiene at every stage, with regular cleaning protocols and quality checks. One of the highlights of the visit was the exploration of the packaging process. VRS Foods utilizes advanced packaging techniques such as vacuum sealing and nitrogen flushing to extend shelf life and preserve the freshness of its products. The company also adheres to environmental sustainability by minimizing waste. Quality control is a key aspect of VRS Foods' production process. The company follows international food safety standards, including Hazard Analysis Critical Control Point (HACCP) and GMP certifications. Regular audits, both internal and external, are conducted to ensure that production meets high-quality standards. The company also trains its employees in food safety and hygiene to ensure that the final product is safe for consumption. The visit also highlighted the importance of innovation, quality, and sustainability in the milk industry.

The Shimla-Manali educational tour, conducted by the Department of Forensic Science, School of Science, ITM University Gwalior, offered 32 students and 2 faculty members, Mr. Anuj Sharma and Ms. Kimee Hiuna Minj, a comprehensive learning experience combining forensic science applications with cultural exploration. The centerpiece of the tour was the visit to the State Forensic Science Laboratory (SFSL) in Junga, established in 1998, where students interacted with Dr. Meenakshi Mahajan, Director of SFSL, and other experts. They gained hands-on exposure to forensic divisions such as Biology, for DNA profiling and bloodstain analysis; Digital Forensics, for data recovery and cybercrime investigations; Ballistics, for firearms and explosives analysis; NDPS, for narcotic substance identification; Toxicology, for toxin detection; Questioned Documents, for forgery detection; and Forensic Psychology, for polygraph testing and BEOS profiling. This visit bridged academic knowledge with real-world applications. The tour also included industrial exposure at a Kullu shawl factory, emphasizing fiber analysis, and cultural visits to sites like Tibetan Monastery and temples, enhancing understanding of forensic anthropology and environmental impacts on evidence. The blend of academic and cultural experiences prepared students for practical challenges in forensic investigations.

A moment of pride and glory!
Our talented athletes have showcased their dedication and excellence at the National Games Dehradun 2025.
🥇 Gold Medal – Basketball 3x3 (Men's Category)
🏀 Brajesh Tiwari & Sonu
🥉 Bronze Medal – Basketball 3x3 (Women's Category)
🏀 Yashika & Riya
Their hard work, perseverance, and passion for the game have brought this incredible achievement, and we couldn't be prouder!
At ITM University Gwalior, we always strive to provide our students with the best opportunities to grow - not just academically, but also in sports, nurturing champions in every field.

ITM
UNIVERSITY
GWALIOR • MP • INDIA